डाक पं.-म.प्र./भोपाल/4-381/2018-20

Reg.RNI/MPHIN/2014/58399

हिन्दी मासिक पत्रिका

अभिनव प्रज्ञादीप

22 अक्टूबर 2019, | वर्ष-5 | अंक-64 | मूल्य : 15/-

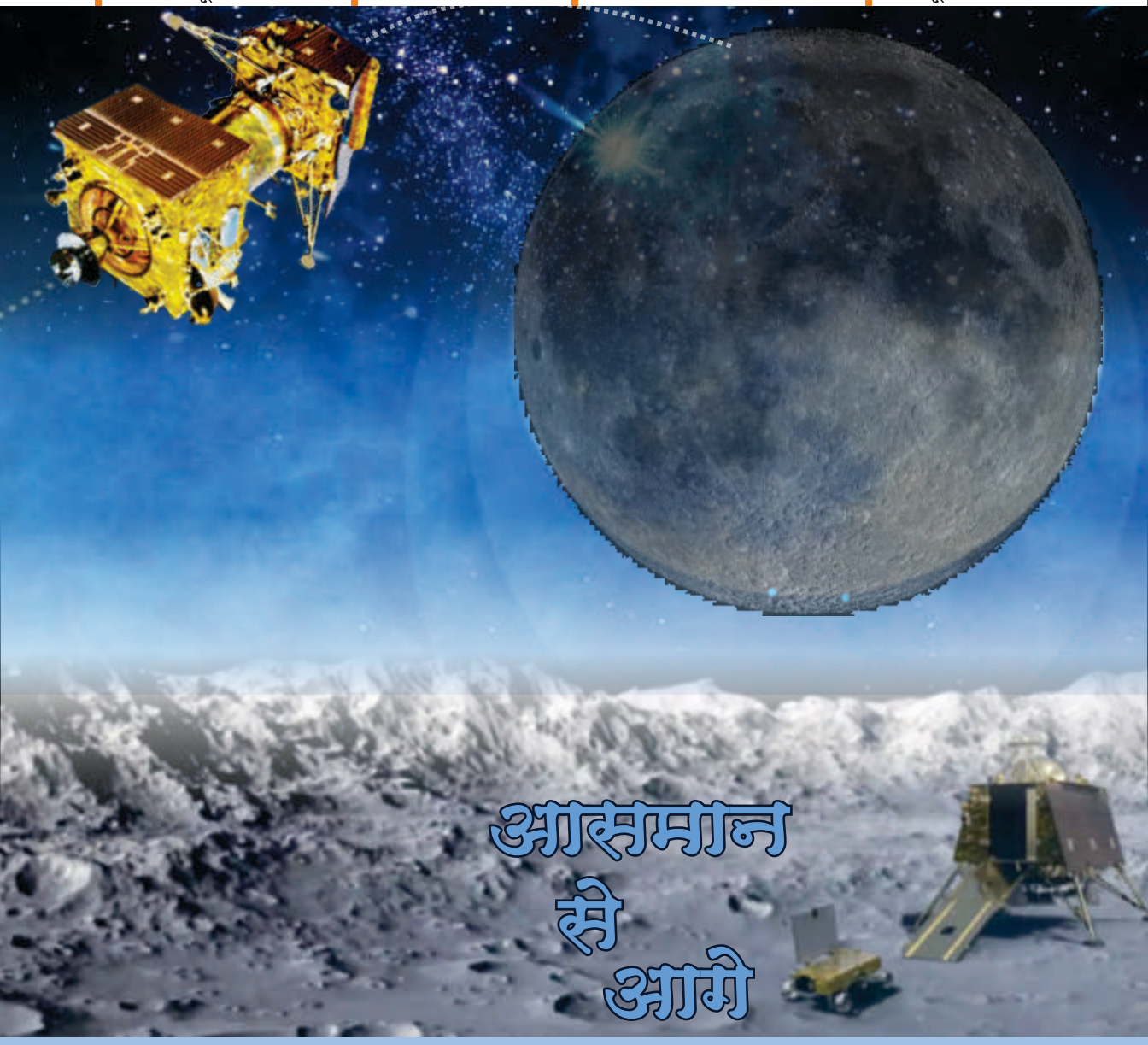

आसमान से आगे

शैक्षिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मासिक पत्रिका

डाक पं.-म.प्र./भोपाल/4-381/2018-20 Reg.RNI/MPHIN/2014/58399

असेसर ट्रेनिंग कार्यक्रम में श्री गोविंद महन्त, श्री राकेश शर्मा एवं श्री हितानंद शर्मा

असेसर ट्रेनिंग कार्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए प्रशिक्षार्थीगण।

असेसमेंट के दौरान समिति से वार्तालाप करते हुए असेसर - भारतभारती, बैतूल

जन्माष्टमी कार्यक्रम व्यावरा विद्यालय में राधा-कृष्ण स्वरूप

जन्माष्टमी उत्सव व्यावरा में सहभागी भैया-बहिन

ATL कार्यशाला टिमरनी में अवलोकन करते श्री शिवकुमार जी (रा. मं. विद्याभारती)

ATL मॉडल प्रदशित करती हुई टिमरनी की बहिनें

नेस्टिड प्रज्ञा का प्रशिक्षण प्राप्त करते प्राचार्यगण - गोविंदनगर

डाक पं.-म.प्र./भोपाल/4-381/2018-20

Reg.RNI/MPHIN/2014/58399

हिन्दी मासिक पत्रिका

अभिनव प्रज्ञादीप

22 अक्टूबर 2019, वर्ष-5 अंक-64 मूल्य : 15/-

सम्पादक
राजेन्द्र सिंह परमार

आकल्पन
शारदा प्रकाशन न्यास, भोपाल

कार्यालय प्रमुख
संतोष शर्मा
मो. 7222992808
ई-मेल: pragyadeep01@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	लेख	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	''अहंकार से विवेक की यात्रा''	राजेन्द्र सिंह परमार	04
2.	एकात्म मानवाद - धर्म का राज्य	पं. दीनदयाल उपाध्याय	06
3.	स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, समर्थ भारत, नया भारत	गाँधी जी	08
4.	पुरूषार्थ चतुष्ट्य और शिक्षा	संकलित	09
5.	दिव्यता की अनुभूति	डॉ. राजेन्द्र दास जी महाराज	14
6.	विज्ञान और तकनीकी का अदम्य भारत	दीपक भसीन	15
7.	मुख्यधारा मीडिया का हिन्दू विरोधी चरित्र	संकलित	18
8.	पुराने अखबारों से सृजनशीलता	पीयूष राठौड़	20
9.	शुकुन्तला देवी प्रतिभाएँ गढ़ी नही जाती	मा. शान्तनु रघुनाथ शेण्डे	22
10.	विद्यामंदिर एवं समाज समर्पित प्रधानाचार्य समय की माँग	श्री विजय कुमार नड्डा	25
11.	प्रधानाचार्य का दायित्व एवं प्रबंध कुशलता	मा. नरेन्द्रजीत सिंह रावल	26

प्रिय पाठक बंधु,

सप्रेम नमस्कार!

अभिनव प्रज्ञादीप हिन्दी मासिक पत्रिका सदस्यता हेतु सभी सरस्वती शिशु/विद्या मंदिर नगरीय, ग्रामीण शिक्षा जिला समितियों एवं जनजाति क्षेत्र की शिक्षा की वार्षिक सदस्यता संख्या 31 अगस्त 2019 तक भेजना थी। शेष रहे सदस्य नई सदस्यता की प्रक्रिया सुनिश्चित करें। पत्रिका की राशि निर्धारित संख्या अनुसार आवश्यक रूप से भेजी जाए। इसके उपरांत पत्रिका सदस्यता में कोई परिवर्तन नहीं हो सकेगा।

चैक या विकर्ष **अभिनव प्रज्ञादीप** के नाम से देय होगा। यदि **Neft** के द्वारा राशि भेजना है, तो खाता क्रमांक **50388935962 IFSC-ALLA0211539** के द्वारा देय होगा। भुगतान के पश्चात अपनी बैंक पावती अनिवार्यतः अभिनव प्रज्ञादीप की ईमेल **pragyadeep01@gmail.com** पर भेज कर सूचित करें। एवं मोबाईल नं. **7222992808** में जानकारी देवें।

प्रादेशिक सचिव (सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान, भोपाल)

नोट- किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र भोपाल (म.प्र.) रहेगा। 'अभिनव प्रज्ञादीप' में प्रकाशित सामग्री में सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक मोहनलाल गुप्ता द्वारा 1806, प्रज्ञादीप हर्षवर्धन नगर, भोपाल से प्रकाशित, संपादक : राजेन्द्र सिंह परमार एवं श्री श्रद्धा ऑफसेट, देशबन्धु कॉम्पलेक्स, जोन-1 एम.पी.नगर, भोपाल-462023 (म.प्र.) से मुद्रित।

अपनी बात

सम्पादकीय

"अहंकार से विवेक की यात्रा"

हमारे पूर्वजों ने माँ के आशीर्वाद से विचार वाणी एवं विज्ञान पाया। इनसे संसार ने विचार,वाणी एवं विज्ञान पाया। पूर्वजों के तेज, पराक्रम एवं पुरूषार्थ से मनुष्य ने दिव्य मानव का पद प्राप्त किया। क्रूर कालचक्र की गति ऐसी चली कि इन महान पूर्वजों के पुत्र पुरूषार्थ हीन होते चले गये। दूध की नदियां सूखने लगी और फिर ये निर्दयी पुत्र भारत माँ का रक्त पीने लगे। आज माँ की देह में वह रक्त भी नहीं बचा, पर लम्बे-लम्बे मांगने वाले हाथ फिर भी इस भारत माँ से मांगते ही जा रहे हैं, नोंच-नोंचकर खाने लगे हैं। यह माँ करोड़ों पुत्रों के होते हुए भी पुत्रहीनसी है उसका केवल हाड़ बचा है। लगता है यह क्रूर संतानें उसको भी चबाकर ही दम लेंगी। 'चाहे जो मजबूरी हो, मांग हमारी पूरी हो' इस स्वार्थी वृत्ति ने दुनिया को संकट में डाला है। शासन ने कर्तव्यों के स्थान पर अधिकारों की ही भूख बढ़ायी है। भारत माँ के अस्तित्व की रक्षा के लिए हम पुत्रों को जागना होगा, पुरूषार्थ करना होगा चरित्रवान बनना होगा।

मार्टिन लूथर ने एक पुत्र होने के नाते कहा था। किसी राष्ट्र की शक्ति की परख इससे नहीं होती की उसके खजाने में कितनी दौलत जमा है ? और न इस पर निर्भर करती है कि उसने अपने बचाव के लिए कितनी सुरक्षा, कितनी किलाबंदी की है, और न ही इस पर निर्भर है कि उस देश ने कितनी इमारतें, अट्टालिकाएँ खड़ी की हैं। किसी देश की शक्ति का मूलाधार उस देश का जागृत, पुरूषार्थी एवं चरित्रवान समाज है।

आज देश में चरित्र नाम की चीज गायब हो रही है। मौलिक मान्यताएँ लुप्त हो रही हैं अनुशासन गायब हो रहा है। भ्रष्टाचार, पद लोलुपता, स्वार्थ, आपाधापी, कालाबाजारी, हिंसा, प्रति हिंसा का चलन बढ़ सा गया है। सत्य, सौन्दर्य एवं शक्ति से सब केवल पैसों में आंकी जाने वाली वस्तुएं बनकर रह गयी हैं। पैसा ही सर्वोपरि मूल्य बन गया है जिनके पास पैसा है वही सर्वशक्तिमान है गरीब एवं कमजोर को जीने का अधिकार नहीं है। चाहे चोरी करो, लूट करो, तस्करी करो, भ्रष्टाचार करो, झूठ बोलो पैसे वाले बनो। पहले कहा जाता था कि ईमानदारी सर्वोत्तम मार्ग है। पर आजकल सुनने में आता है कि नादान लोग ईमानदारी बरतते हैं। कुशल लोग बेईमानी से धन कमाते हैं, पद-प्रतिष्ठा पाते हैं इसकी चर्चा खुलेआम करते लजाते नहीं। ऐसा विकृत समूह सत्य एवं ईमानदारी में विश्वास रखकर काम करने वालों को नादान मानता है, उनके पवित्र संस्कारों एंव आचरण की हँसी उड़ाता है। जिन्होंने

खून पसीने से अपने घर, परिवार, समाज एवं संगठन को खड़ा किया, सजाया-संवारा, संरक्षित किया उसी को चतुर चालाक, अहंकारी, प्रदर्शनकारी लोग अनदेखा कर कार्य संस्कृति को अपमानित कर रहे हैं। प्यार और सौहार्द का स्थान जब घृणा, उपेक्षा एवं वैमनस्य लेने लगे। संकीर्णता एवं अपने पराये भाव से जब निर्णय होने लगें तो लगता है कि न्याय एवं धर्म पीछे छूट गया है।

पवित्र संस्कारों, नीति, नियति एवं चरित्र की अनदेखी कर स्थापित भव्य, भवन, भव्य ईमारतें, सुरक्षित किला, पैसों से भरा खजाना सब धरे के धरे रह जायेंगे, मूल्यों को तिलांजलि देकर घर, परिवार, समाज एवं संस्थानों की रक्षा नहीं हो सकती। जागृत, पुरूषार्थी एवं चरित्रवान नेतृत्व समय रहते यदि विचार करें तो ही विचार, वाणी एवं विज्ञान से पूर्वजों की श्रेष्ठ थाती को बचा सकने में सफल हो सकते हैं।

सम्पादक
राजेन्द्र सिंह परमार

:- विशेष -:

''गुरूग्रंथ साहिब प्रकाश पर्व 550 वां वर्ष - मन की बुराईयों को दूर कर उसे सत्य ईमानदारी और सेवाभाव से प्रकाशित करना। गुरू गोविन्द जयंती को प्रकाश पर्व के रूप में मनाया जाता है। वे सिक्खों के दशम गुरू थे, इस शुभ अवसर पर गुरूद्वारों में गुरूग्रंथ साहिब का पाठ किया जाता है। सामूहिक लंगर का आयोजन किया जाता है गुरू गोविन्द सिंह जयंती 5 जनवरी को मनायी जाती है इसे भव्य स्वरूप में विद्यालयों में भी मनाया जाना चाहिए।

अक्टूबर - 2019 के स्मरणीय दिवस

1. महात्मा गाँधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती	02.10.2019
2. गुरू नानक देव पुण्यतिथि	04.10.2019
3. रानी दुर्गावती जयंती	05.10.2019
4. दुर्गाष्टमी	06.10.2019
5. विजया दशमी	08.10.2019
6. शरद पूर्णिमा, वाल्मिकी जयंती	13.10.2019
7. रामदास जयंती	15.10.2019
8. करवा चौथ	17.10.2019
9. धनतेरस	25.10.2019
10. दीपावली	27.10.2019
11. वल्लभ भाई पटेल जयंती	31.10.2019

उपरोक्त महत्वपूर्ण तिथियां हमें अपने सांस्कृतिक दायित्व के निर्वहन की प्रेरणा देंगी। विद्यालय के आंगन में महान पुरूषों की स्मृतियाँ सदैव जीवित बनी रहें, ऐसा प्रयास हम सभी करेंगे।

एकात्म मानववाद - धर्म का राज्य

(पण्डित दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वाङ्मय)

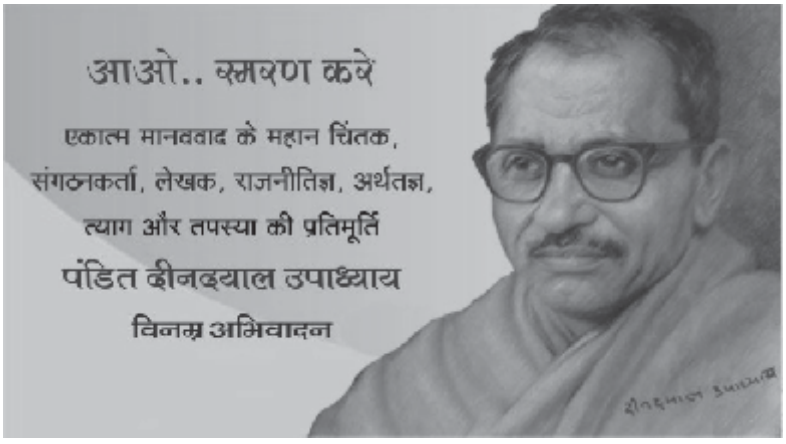

व्यक्ति के विकास और समाज के हित का संपादन करने के उद्देश्य से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरूषार्थों की कल्पना की गई है। धर्म, अर्थ, और काम एक दूसरे के पूरक और पौषक हैं। मनुष्य की प्रेरणा का स्रोत तथा उसके कार्यों का मापक किसी एक को ही मानकर चलना अधूरा होगा। यद्यपि अर्थ और काम के बिना धर्म अर्थहीन और बेकाम है, फिर भी बिना धर्म के अर्थ और काम की सिद्धि नहीं।

अनेकदा धर्म को मत या मजहब मानकर उसके गलत अर्थ लगाए जाते हैं, यह भूल अंग्रेजी के 'Religion' शब्द का धर्म से अनुवाद करने के कारण हुई है। धर्म का वास्तविक अर्थ है- वे सनातन नियम, जिनके आधार पर किसी सत्ता की धारणा और जिनका पालन कर वह अभ्युदय और नि:श्रेयस की प्राप्ति कर सके। किसी स्थिति विशेष या वस्तु विशेष का विचार करते समय सनातन शब्द सापेक्ष हो जाता है। अत: जहाँ धृति, क्षमा आदि धर्म के लक्षणों में कोई परिवर्तन नहीं होता, वहाँ देशकाल एवं स्थितियों के परिवर्तन के साथ अन्य धर्म बदल जाते हैं। फिर भी इस संक्रमणशील जगत में धर्म ही वह तत्व है, जो स्थायित्व लाता है। इसलिए धर्म को ही नियंता माना गया है एवं प्रभुता उसी में निहित है।

भारतीय राज्य का आदर्श धर्मराज्य रहा है। धर्मराज्य Theocracy अथवा मजहबी राज्य नहीं। यह एक असांप्रदायिक राज्य है। सभी पंथों और उपासना पद्धतियों के प्रति सहिष्णुता एवं समादर का भाव भारतीय राज्य का आवश्यक गुण है। अपनी श्रद्धा और अंत:करण की प्रवृत्ति के अनुसार प्रत्येक नागरिक को उपासना का अधिकार अक्षुण्ण है तथा राज्य के संचालन अथवा नीति निर्देशन में किसी भी व्यक्ति के साथ मत या संप्रदाय के आधार पर भेदभाव नही हो सकता। यही धर्म पर आधारित राज्य है।

धर्मराज्य किसी व्यक्ति को अथवा संस्था को सर्वसत्ता संपन्न नहीं मानता प्रत्येक व्यक्ति नियमों और कर्तव्यों से बँधा हुआ है। कार्यपालिका, विधायिका और जनता सबके अधिकार धर्माधीन ही हैं। अंग्रेजी की विधि के अनुसार (Rule of Law) धर्मराज्य की कल्पना को व्यक्त करने वाला निकटतम शब्द है। निरंकुश और अधिनायकवादी प्रवृत्तियों को रोकने तथा लोकतंत्र को स्वच्छंदता में विकृत होने से बचाने में धर्मराज्य ही समर्थ

है। राज्यों की अन्य कल्पनाएँ अधिकार मूलक है, किंतु धर्मराज्य कर्तव्य प्रधान है।

भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा लेकर चलने वाले भी कुछ पक्ष हैं। किंतु वे भारतीय संस्कृति की समानता को उसकी गतिहीनता समझ बैठे हैं, और इसलिए बीते युग की पीढ़ियों अथवा यथास्थिति का समर्थन करते हैं। संस्कृति के क्रांतिकारी तत्व की ओर उनकी दृष्टि नहीं जाती। वास्तव में समाज में प्रचलित अनेक कुरीतियाँ जैसे छुआछूत, जातिभेद, दहेज प्रथा, मृत्युभोज, नारी अवमानना आदि तथा जमींदारी, जागीरदारी आदि व्यवस्थाएँ भारतीय संस्कृति के और समाज के स्वास्थ्य की सूचक नहीं बल्कि रोग के लक्षण हैं। जातिगत भेदभाव तो सहिष्णुता की कमी, व्यावसायिक श्रम विभाजन की परिस्थितियों में परिवर्तन के बाद भी चलते रहने पर वे रूढ़ियाँ बन जाती हैं। भारत के अनेक महापुरूष, जिनकी भारतीय परम्परा और संस्कृति के प्रति अनन्य निष्ठा थी, इन बुराईयों के विरूद्ध लड़े। अनेक अनुपयुक्त आर्थिक और सामाजिक विधानों की हम जाँच करें तो पता चलेगा कि वह हमारी सांस्कृतिक चेतना के क्षीण होने के कारण युगानुकूल परिवर्तन की कमी से बनी हुई रूढ़ियों और परकीयों के साथ संघर्ष की परिस्थिति से उत्पन्न समय विशेष की आवश्यकता की पूर्ति की माँग को पूरा करने के लिए अपनाए गए उपाय अथवा परकीयों द्वारा थोपी गई या उनका अनुकरण कर स्वीकार की गई व्यवस्थाएँ मात्र हैं। भारतीय संस्कृति के नाम पर उन्हें जीवित रखना अपने निहित स्वार्थों की रक्षा के लिए मात्र हास्यास्पद प्रयत्न हैं। और एक बात, कि जितना भी प्राचीन है, वह सब हिंदू संस्कृति नहीं है। संस्कृति इतिहास से भिन्न है। हमारे जातीय जीवन में अनेक अच्छी बुरी बातें घटी हैं। जो अच्छा है, उसका पुरस्कार करना तथा शेष का परिष्कार अथवा तिरस्कार ही प्रकृति को संस्कृति बनाता है। फिर भी हिंदू जीवन की विसंगतियाँ हिंदू दर्शन अथवा संस्कृति की विसंगतियाँ नहीं है, यह अच्छी तरह से समझना चाहिए।

संस्कृति के रूपों और तत्वों में भेद करना आवश्यक है। संस्कृति के कतिपय उपकरण तो रूप मात्र हैं। और कतिपय उसके आधारभूत तत्व हैं। ऐसा कभी-कभी प्रतीत होता है कि इस युग प्रवाह में हिंदू जीवनदर्शन और भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के कुछ अंग अर्थहीन और अनावश्यक हो गए हैं। आज के बदले हुए संदर्भों में रूपों का मोह नहीं करना चाहिए। हमें अपनी दृष्टि तत्वों की ओर केन्द्रित करनी चाहिए। अब जैसे जाति व्यवस्था है यह तो रूप है। तत्व है एकात्मा के आधार पर समाज की व्यवस्था। ये रूप जब तक उपयोगी है अथवा हानिकारक नहीं है, हम इन्हें चलने दें परंतु तत्व की रक्षा महत्वपूर्ण है, हम उसकी रक्षा अवश्य करें।...

हमारी संपूर्ण व्यवस्था का केन्द्र मानव होना चाहिए, जो 'यत् पिंडे तत् ब्रहांडे' के न्याय के अनुसार समष्टि की जीव मान प्रतिनिधि एवं उसका उपकरण है। भौतिक उपकरण मानव के सुख के साधन हैं, साध्य नहीं। जिस व्यवस्था में भिन्न रूचि प्रवृत्तियों से युक्त मानव का विचार केवल एक औसत मानव से हो अथवा शरीर-मन-बुद्धि-आत्मा युक्त अनेक ऐषणाओं से प्रेरित पुरूषार्थ चतुष्ट्यशील संपूर्ण मानव के स्थान पर एकांगी मानव का ही विचार किया गया हो, वह अधूरी है। हमारा आधार एकात्म मानव है, जो अनेक एकात्म समष्टियों का एक साथ प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखता है। मानवतावाद या एकात्मवाद अथवा एकात्म मानवतावाद के आधार पर हमें संपूर्ण व्यवस्था का विकास करना होगा।...

– साभार, राष्ट्रधर्म

(दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वाङ्मय)

स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, समर्थ भारत, नया भारत

(गाँधी जी की 150 वीं जयंती वर्ष विशेष)

यही तो नया भारत है जो नया विचार, वाणी, व्यवहार का संचार कर रहा है। स्वदेशी भाषा, स्वदेशी उत्पाद एवं विचार को जो ताकत गाँधी जी एवं वल्लभ भाई पटेल से मिली है उनको नमन करता भारत, नया भारत है।

यह नया भारत है। हम सब सजग भारतवासी इसकी आवाज हैं। देश का नया नेतृत्व, नयी सोच, नया उत्साह, नवोन्मेश एवं नयी कार्य संस्कृति ने नये भारत को नयी राह दिखायी है। गंदगी से निकलकर अब लोग स्वच्छ भारत बनाने में लग गये हैं। घर आंगन, कार्यालय, विद्या संस्थान एवं परिसर प्रांगण सब स्वच्छ हो रहे हैं। स्वच्छता के बढ़ने से स्वस्थ भारत की यात्रा आसान हुई है। भ्रष्टाचार एवं आतंक के वातावरण से निकलकर देश समर्थ भारत की ओर बढ़ चला है। दुनिया आज भारत की बात सुनने लगी है। समय से पूर्व सरकारी योजनाएं पूरी होने लगी हैं। राजनेता भी अपना राजनैतिक चरित्र उजला करने में लग गये हैं। सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य बदला नजर आने लगा हैं। तुष्टिकरण का भूखा समाज अब स्वयं को राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने में गौरव का अनुभव करने लगा है। अराजकता फैलाने वालों को दण्ड मिलने लगा है। कानून का राज्य विस्तारित हो रहा है। प्रतिभा एवं मेहनतकश नौजवान आगे बढ़ रहे हैं। देश की सीमायें और अधिक सुरक्षित हो रही हैं। देश की व्यापक समस्याएं सुलझायी जा रही हैं। कश्मीर की वादियाँ सुकून की ओर बढ़ रही हैं। अयोध्या को भी न्याय की आस जगी है। गांव का गरीब, मजदूर, किसान, नौजवान सभी भविष्य के प्रति आशान्वित लग रहे हैं न्यायपूर्ण एवं समतामूलक समाज की रचना में यह संधिकाल है अंधेरा छट रहा है, प्रकाश फैल रहा है। यही तो नया भारत है जो नया विचार, वाणी, व्यवहार का संचार कर रहा है। स्वदेशी भाषा, स्वदेशी उत्पाद एवं विचार को जो ताकत गाँधी जी एवं वल्लभ भाई पटेल से मिली है उनको नमन करता भारत, नया भारत है।

- राजेन्द्र सिंह परमार
प्रांत प्रशिक्षण प्रमुख, विद्याभारती

पुरूषार्थ चतुष्ट्य और शिक्षा

धर्म और अधर्म को जानने का विवेक विकसित किया जाना चाहिए। अधर्म का त्याग तथा धर्म के प्रति कठोरता के लिए सदा उद्यत रहे, ऐसी शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए। धर्म की रक्षा के लिये सदैव तत्पर रहना चाहिए। विपत्ति में भी धर्म का त्याग न करें ऐसी निष्ठा विकसित करनी चाहिए। संसार में विभिन्न प्रकार के धर्म व सम्प्रदाय प्रचलित हैं। उन सभी का अध्ययन करना चाहिए।

हिन्दू धर्म में पुरूषार्थ से तात्पर्य मानवजीवन के उद्देश्य से है। 'पुरूषैश्यते इति पुरूषार्थः' पुरूषार्थ शब्द 'पुरूष' और 'अर्थ' दो शब्दों के मेल से बना है। इसका अर्थ है कि मानव की अपने जीवन में 'क्या' प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए? वेदों में मनुष्य मात्र के लिये चार पुरूषार्थ बताये गये हैं 1.धर्म 2.अर्थ 3. काम 4. मोक्ष। इसलिए इन्हें पुरूषार्थ चतुष्ट्य कहते हैं। भारतीय संस्कृति में पुरूषार्थ चतुष्ट्य का विशिष्ट स्थान रहा है। वस्तुतः इन पुरूषार्थों ने मनुष्य के जीवन में मौलिकता तथा आध्यात्मिकता का अदभुत समन्वय स्थापित किया है।

1. धर्म पुरुषार्थ –

प्राचीन काल से ही हमारे मनीषियेां ने धर्म को वैज्ञानिक ढंग से समझाने का प्रयत्न किया है। धर्म का विवेचन करते समय यह बताया गया है कि धर्म वह है जिससे अभ्युदय और निः श्रेयस की सिद्धि हो। 'यतो अभ्युदनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः' (कणाद वैशिशिक सूत्र १.१.२)। अभ्युदय से लौकिक उन्नति तथा निः श्रेयस से पारलौकिक उन्नति व कल्याण का बोध होता है। जीवन के ऐहिक व पारलौकिक दोनों पक्षों को धर्म से जोड़ा गया है। भारतीय दृष्टि में धर्म का अर्थ गहन और विशाल है। यह कोई उपासना पद्धति न होकर एक जीवन पद्धति है। धर्म मनुष्य को आधि, व्याधि और उपाधि मुक्त कर सार्थक जीवन जीने की प्रेरणा देता है। धर्म मानव को पशुता से मानवता की ओर बढ़ने को प्रेरित करता है। हृदय की पवित्रता ही धर्म का वास्तविक स्वभाव है। इसका सार जीवन में अनुशासन व संयम कायम करता है। इस प्रकार धर्म मनुष्य के कर्तव्य के साथ जुड़ा है।

मनुष्य के प्रति उसका जो कर्तव्य है, वह उसे पूरा करना है। पशु, पक्षी, प्राणी, वनस्पति आदि के प्रति उसका जो कर्तव्य है, वही उसका धर्म है। कर्तव्य धर्म का सर्वाधिक महत्वपूर्ण आयाम है। हमारे मनिषियों ने इस कर्तव्य धर्म को अनेक प्रकार से व्यवस्थित किया है, उनके विभिन्न आयाम निम्नानुसार हैं –

- आश्रम धर्म : मनुष्य से यह अपेक्षा की गई है कि वह अपना जीवन धर्म के अनुकूल बनाकर बिताये। इसके लिए आश्रमों की व्यवस्था दी है। ये चार आश्रम हैं। 1. ब्रह्मचर्य आश्रम 2. गृहस्थाश्रम 3. वानप्रस्थाश्रम 4. सन्यास आश्रम

डॉ. दयानन्द भार्गव ने परिभाषा दी है कि जहाँ निजी भौतिक लाभ के लिए कष्ट उठाये जाते हैं, वह श्रम है, जहाँ दूसरों की आज्ञा से कष्ट उठाये जाते हैं वह परिश्रम है, किन्तु जहाँ दूसरों के लिए स्वेच्छा से और आनन्दपूर्वक कष्ट किए जाते हैं वह आश्रम है। इस कष्ट को तप कहते हैं। इस प्रकार चारों आश्रम एक प्रकार से तप ही हैं। मनुष्य की आयु को सौ वर्ष मानकर प्रत्येक आश्रम के लिये 25-25 वर्ष निर्धारित किये हैं।

आयु के प्रथम पच्चीस वर्ष ब्रह्मचर्य आश्रम के होते हैं। इसमें भी प्रथम पाँच वर्ष बालक अपने परिवार के साथ रहता है। इन पाँच वर्षों में बालक के जातकर्म, कर्णवेध, नामकरण आदि संस्कार सम्पन्न किये जाते हैं। उपनयन संस्कार के बाद ब्रह्मचर्य आश्रम प्रारंभ होता है। ब्रह्मचर्य का अर्थ है ब्रह्म में चर्या करना। चर्या का अर्थ है आचरण की पद्धति। इस प्रकार ब्रह्मचर्य का आशय हुआ ब्रह्म को प्राप्त करते हेतु आचरण (उपाय) करना। ब्रह्मचर्य धर्म के प्रमुख लक्षण हैं- गुरूगृहवास करना, भिक्षाटन करना, संयम अर्थात इन्द्रियनिग्रह के नियमों का कठोरता से पालन करना, अपने गुरू की परिचर्या करना, उसकी आज्ञा का पालन करना, वेदाध्ययन व स्वाध्याय के लिये तत्पर रहना, तथा कठोर अनुशासन तथा आश्रम के नियमों का अक्षरश: पालन करना। इस प्रकार ब्रह्मचर्य आश्रम कठोर व्रत, तप और विद्याध्ययन का काल है। यह चरित्र व क्षमताओं के अर्जन तथा सृजन का काल है। अध्ययन की समाप्ति पर गुरू अपनी पद्धति से परीक्षा लेते हैं तथा शिक्षापूर्ण करने पर समावर्तन संस्कार के पश्चात उन्हें घर जाने की अनुमति देते हैं। इस तरह गुरू की आज्ञा से गुरूकुल छोड़ कर विद्यार्थी अपने पिता के घर जाने हेतु प्रस्थान करता है। तब इसे स्नातक कहा जाता है। ऐसे स्नातक को समाज में बड़ा मान तथा गौरव मिलता था। गुरूकुल में रहते हुए उसमें ओज, तेज, बल, कौशल, मेघा, प्रज्ञा, प्रतिभा आदि अनेक गुणों का विकास होता है। वह ज्ञान सम्पादन तथा कर्म कौशल के लायक बनता था। वस्तुत: ब्रह्मचर्य आश्रम सम्पूर्ण जीवन का आधार होता था।

समावर्तन संस्कार के बाद विद्यार्थी अपने गुरू से दीक्षात्-उपदेश सुनता है। इस उपदेश में गुरू द्वारा अपने विद्यार्थी को गृहस्थाश्रम में रहते हुए उसके कर्तव्यों का बोध कराया जाता है। गृहस्थाश्रम अपने सभी प्रकार के सांसारिक दायित्वों को पूर्ण करने का आश्रम है। स्नातक अब गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता है। गृहस्थाश्रम का पहला संस्कार है - विवाह संस्कार। इसके लिये वह योग्य कन्या से विवाह करता है। कुल, गोत्र, वर्ण, जाति आदि की विशेषताएँ देखकर वर-कन्या एक दूसरे से विवाह करते हैं तथा सुयोग्य संतान को जन्म देते हैं। गृहस्थाश्रम में पति-पत्नी साथ में मिलकर समस्त कर्तव्यों का पालन करते हैं। जैसे ऋणत्रय मुक्ति के लिये कार्य करना, पंचमहायज्ञ सम्पन्न करना, अतिथि सेवा करना, यज्ञ, दान व तप आदि समस्त कार्य पति-पत्नी संयुक्त रूप से करते हैं। महाभारत में गृहस्थाश्रम का वर्णन इस प्रकार से किया गया है -

अहिंसा सत्यवचनं सर्वभूतानुकम्पनम्।
शमो दानं यथाशक्ति गार्हस्थो धर्म उत्तम: ।।
परदारेण्वरसंसर्गो न्यासस्त्रीपरिक्षणम्।
अदत्तादानविरमो मधुमाँसस्य वर्जनम्।।
एष पञ्चविद्यो धर्मो बहुशाख: सुखोदय: ।।

अर्थात् अहिंसा, सत्यवचन, प्राणी मात्र पर दया, शम और दान यह उत्तम गृहस्थ धर्म है। परस्त्री के संसर्ग में न रहना, दूसरे का न्यास और स्त्री का रक्षण करना, दी हुई वस्तु वापस न लेना, मद्य और मांस का सेवन न करना, यह पांच प्रकार का धर्म गृहस्थ के लिए है।

इसी प्रकार धर्माचरण के आधार पर अर्थ व काम का अर्जन करते हुए सभी प्रकार के सुखों का उपभोग करना गृहस्थाश्रम के अन्तर्गत आता है। गृहस्थाश्रम अन्य तीनों आश्रमों को आश्रय देते हैं, इसलिए इसे सभी आश्रमों में श्रेष्ठ कहा गया है। २५ से ५० वर्ष तक की आयु का काल इसके लिए निर्धारित किया गया है।

आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत तीसरा आश्रम वानप्रस्थाश्रम कहा जाता है। इसकी अवधि मनुष्य की

आयु के ५० से ७५ वर्ष की मानी गई है। इस आश्रम में प्रवेश के पूर्व उसकी संतानें व्यस्क हो गई होती हैं। उनके विवाह हो चुके होते हैं। घर में पौत्र-पौत्री का भी आगमन हो जाता है। शरीर थकने लगता है। इस समय उसके गृहस्थाश्रम के समस्त दायित्व सम्पन्न हो जाते हैं। अब वह अपने सांसारिक दायित्वों को अपने पुत्रों को सौंप कर एकादि साधना हेतु गृहत्याग करना चाहता है। वानप्रस्थाश्रम में वह गृहत्यागी तथा स्वतंत्र होता है। गृह के त्याग के साथ ही वह घर के सुखों व सुविधाओं का भी त्याग करता है। यदि पत्नी साथ आना चाहती है तो वह पत्नी के साथ गृहत्याग करता है, अन्यथा पत्नी को वह अपने पुत्रों को सौंपता है। वह वन में रहता है तथा वन में मिलता है उससे वह अपना आश्रय तथा आहार प्राप्त करता है। इस समय वह सांसारिक दायित्वों के साथ अधिकारों का भी त्याग करता है। सादे वस्त्र धारण करता है तथा प्रतिदिन अग्निहोत्र करता है। प्राणियों के बीच रहता है तथा उनके प्रति दयाभाव रखता है। इस काल खण्ड में वह स्वाध्याय करता है, चिन्तन, मनन कर उनके मर्म को समझने का प्रयास करता है। वानप्रस्थाश्रम वास्तव में थकी हुई इन्द्रियों व मन को विश्राम देने वाला काल है। तितिक्षा, तप, वैराग्य और मुमुक्षा वानप्रस्थ आश्रम के केन्द्रवर्ती तत्व हैं। इस आश्रम में वह अपने अनुभव का लाभ स्वयं के परिवार को एवं समाज को देने का कार्य करता है। परिवार व समाज का प्रबोधन भी करता है।

वानप्रस्थाश्रम में तप और तितिक्षा, मुमुक्षा और वैराग्य परिपक्व हो जाने पर व्यक्ति सन्यासाश्रम में प्रवेश करता है। यह आश्रम सभी के लिये नहीं होता। तीव्र वैराग्य के बिना सन्यास व्यर्थ है। इसलिए वानप्रस्थी जब तक इसका अधिकारी नहीं हो जाता तब तक वह सन्यासाश्रम में प्रवेश के योग्य नहीं होता। इसलिए प्रत्येक के लिये सन्यास लेना आवश्यक नही होता। सन्यास के लिये समय की निश्चितता नहीं है। जिस समय वैराग्य का उदय हो, उस समय सन्यास लेना उचित होता है 'यदहरेव विरजेत तदहरेव प्रव्रजेत।' सन्यासी सबकुछ छोड़ता है, अपना नाम, कुल, गोत्र जाति वंश, सम्पदा आदि सभी। यज्ञ, दान, अतिथि सेवा जैसे वानप्रस्थी के कर्तव्य भी छोड़ता है। वह सभी का होता है, किन्तु उसका अपना कोई नहीं। भिक्षापात्र कोपीन तथा दण्ड उसकी सम्पत्ति है। करतल भिक्षा व तरूवास उसका आदर्श होता है। अनिकेत व निराग्नि ये दो उनके प्रमुख लक्षण हैं। स्वाद को जीतना उसकी मुख्य साधना है। इसलिए भिक्षा से प्राप्त सभी पदार्थों को मिलाकर तथा उसमें पानी मिलाकर उसे वह खाता है अथवा पीता है। सन्यासी का एकमेव कार्य होता है-तप। वह एकान्त में रहकर तप करता है, साथ ही शास्त्राध्ययन भी करता है। बाद में उपदेश देता है। सन्यासी तप करते ही लोक का कल्याण करता है। सन्यासी का अन्त्यसंस्कार भी अग्निसंस्कार की तरह नहीं होगा। उसे या तो भूमि में समाधि दी जाती है अथवा उसे जल समाधि दी जाती है। वह भगवे वस्त्र धारण करता है तथा मोक्षमार्गी होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आश्रम व्यवस्था भारतीय समाज की एक अदभुत रचना है। यद्यपि वर्तमान समय में इसका ह्रास अवश्य हुआ है, इसे वर्तमान परिप्रेक्ष्य में युगानुकूल बनाते हुए पुनः प्रस्थापित करने की आवश्यकता है।

2. वर्णधर्म -

मनुष्य का गुणधर्म ही मनुष्य का स्वभाव होता है। स्वभाव के अनुसार ही मनुष्य के वर्ण भी निश्चित होते हैं। भारतीय समाज व्यवस्था में वर्णव्यवस्था को चार भागों में बाँटा गया है। यथा-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र व स्तुतः वर्ण व्यवस्था का मूल आधार प्राकृतिक है। भगवद्गीता में बताया गया है कि वर्ण गुण और कर्म के अनुसार निश्चित होते हैं। गुण का अर्थ है-सत्व, रज और तम। ये तीनों गुण प्रत्येक व्यक्ति में होते ही हैं। किन्तु इनके कम या अधिक होने से वर्ण निश्चित होता है। ये तीनों गुण जिनमें प्रबल होते हैं वह ब्राह्मण है। यदि रजोगुण, सत्व व तमोगुण क्रम से प्रबल है तो वह क्षत्रिय है। रजोगुण, तमोगुण और सत्वगुण क्रम से प्रबल है तो वह वैश्य है, और यदि तमोगुण, रजोगुण और सत्वगुण इस क्रम में प्रबल है तो वह शूद्र है। जन्मजन्मान्तर के कर्म, कर्मफल और उसके भोग की श्रृंखला से इन जन्म

के लिए जो संस्कार बनते हैं, उसे कर्म कहते हैं। गुण और धर्म प्रत्येक व्यक्ति की मानसिक प्रवृत्तियों के कारण ही बनते हैं। प्रत्येक जन्म में व्यक्ति का प्राकृतिक वर्ण अलग-अलग होता है। किन्तु सामाजिक व्यवस्था में यह वंश परम्परा के अनुसार स्थापित हो गया है। इसका आशय यह है कि स्वभाव के लिए वर्ण गुण और कर्म के अनुसार तय होते हैं जबकि व्यवस्था की हानि से वर्ण जन्म के आधार पर निश्चित होते रहे हैं।

ब्राह्मण का कर्तव्य प्रत्येक वर्ग को धर्म की शिक्षा देना है। इस दृष्टि से उसमें शुद्धता, पवित्रता, तप, सादगी व साधना का आचरण होना चाहिए। अपना आचरण छोड़ने वाला ब्राह्मण, ब्राह्मण नहीं कहा जा सकता, भले ही उसने ब्राह्मण कुल में जन्म लिया हो। क्षत्रिय का धर्म युद्ध करना दुर्बलों की रक्षा करना, दान करना और शासन करना है।उसे अध्ययन करना है, किन्तु अध्यापन नहीं करना है। शौर्य उसकी विशेषता है, दया-दान करना उसका स्वभाव है। वह वैभव भोगता है किन्तु घाव भी सहन करता है। युद्ध से वह पलायन नहीं करता। वैश्य का काम समाज के लिए भौतिक पदार्थों की पूर्ति करना है। अन्न आदि आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह कृषि करता है। वह वैभव में रहता है तथा लक्ष्मी का उपासक है। शूद्र परिचर्या का काम करता है। परिचर्या का अर्थ है हाथ से काम करते हुए समाज की सेवा करना। व्यापक अर्थ में शूद्र समाज के लिए वस्तुओं का निर्माण करने वाला होता है। एक परिभाषा ऐसी दी जाती है कि जो सजीव से दूसरा सजीव पैदा करता है वह शूद्र है। इस अर्थ में कृषक वैश्य है तथा बढ़ई अथवा लोहार आदि शूद्र हैं। शूद्र वस्तुओं का उत्पादन करता है और वैश्य उसकी क्रय-विक्रय की व्यवस्था करते हैं। दोनों मिलकर समाज को समृद्ध बनाते हैं। शूद्र को नीचा मानना अत्यंत निन्दनीय है। भले ही आर्थिक सुरक्षा यह शूद्रों का अधिकार है। आज ब्राह्मण भी आर्थिक सुरक्षा खोजते हैं, इसलिए उनका व्यवहार भी शूद्रों जैसा है। शूद्र कारीगर होते हैं, कारीगरों से समाज समृद्ध बनता है। ब्राह्मण व शूद्र का कार्य साथ-साथ चलना है। एक का क्षेत्र संस्कृति का है तो दूसरे का कर्म समृद्धि का। संस्कृति और समृद्धि साथ-साथ चलनी चाहिए तभी समाज जीवन श्रेष्ठ बनता है। इस तथ्य को भूलने के कारण बहुत अनर्थ हुआ है। आज इसे ठीक करने की आवश्यकता है।

3. प्रकृति धर्म-

इस सृष्टि में जितने भी पदार्थ हैं, उनका अपना-अपना स्वभाव है। उसे पदार्थ का गुणधर्म कहते हैं। मनुष्य के अलावा सारे पदार्थों का गुणधर्म होता है। मनुष्य का गुणकर्म होता है। इसी गुणकर्म के आधार पर बनाई गई वर्णव्यवस्था बाद मे जन्मजात बन गई। किन्तु शेष सारी व्यवस्थाएँ गुणधर्म के अनुसार ही बनी हैं। मनुष्य की शेष सृष्टि के साथ सामंजस्य बिठाना ही होता है और इसलिए इस प्रकृतिधर्म को भी जानना आवश्यक है। मनुष्य में विवेकशक्ति अधिक होने के कारण सृष्टि के संसाधनों से वह अपरिमित लाभ प्राप्त करता है। लाभ प्राप्त करने के साथ-साथ सृष्टि के सारे पदार्थों का रक्षण करना उसके प्रति व्यवहार का भाव रखना, अपने सुख के लिये शोषण नहीं करना, यह मानव का परम धर्म है। इस धर्म का पालन करने के लिए उसे प्रकृति को जानना आवश्यक है।

प्रकृति के सारे पदार्थ एक ही आत्मतत्व के विस्तार मात्र हैं। यह समझकर प्रकृति के साथ आत्मीय सम्बंध

बनाने की आवश्यकता है। प्रकृति हमारी माता है तथा उसके अपरिमित उपकार हमारे ऊपर हैं, यह समझकर उसके साथ व्यवहार करने की आवश्यकता है। हमें यह भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि अभ्युदय और नि:श्रेयस की प्राप्ति भी प्रकृति धर्म का पालन किए बिना संभव नहीं है।

4. धर्म पुरुषार्थ हेतु शिक्षा -

एक प्रसिद्ध सुभाषित है -

आहारनिद्राभयमैथुनम् च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेवामधिको विशेष: धर्मेण हिना: पशुभि: समाना।।

अर्थात् आहार, निद्रा, भय और मैथुन के मामले में ही पशु और मनुष्य समान हैं। दोनों में भिन्नता ही धर्म के कारण है। धर्म रहित मनुष्य पशु समान ही है। अत: शिक्षा द्वारा धर्म सिखाना आना चाहिए। वैसे तो धर्म और शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, किन्तु आज धर्म की पुन: व्याख्या करे। धर्म शिक्षा के नाम पर आज मूल्य शिक्षा कहा जाता है, किन्तु यह धर्म-शिक्षा का बहुत ही लघु स्वरूप है। धर्म शिक्षा को तथाकथित विवाद से बाहर करने की आवश्यकता है। तभी हम धर्म शिक्षा की सही व्याख्या कर सकेंगे। धर्म शिक्षा सम्प्रदाय शिक्षा अथवा पंथ शिक्षा नहीं है। धर्म का अर्थ जितना व्यापक है, उसकी शिक्षा भी उतनी ही व्यापक है।

धर्म शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य होनी चाहिए। चाहे वह डॉक्टर बने, चाहे इंजीनियर बने, चाहे शिक्षक अथवा प्रशासक बने अथवा चाहे वह व्यापारी, उद्योगपति अथवा कर्मचारी बने, प्रत्येक के लिए धर्म पुरूषार्थ की शिक्षा अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। क्योंकि धर्म ही समाज जीवन का आधार है। हमें यह जान लेना चाहिए के धर्म जानकारी का विषय नहीं है, जैसा कि आजकल नैतिक शिक्षा को पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से पढ़ाया जाता है। वस्तुत: यह मानसिकता तथा आचरण का विषय है। बाल अवस्था में बालक की जब मानसिक और शारीरिक आदतें बनती हैं, उसी समय धर्म शिक्षा आचरण के रूप में दी जानी चाहिए। यह भी हो सकता है कि बालक के व्यवहार में जब तक नैतिक गुणों का विकास न हो, तब तक उसे प्रगत कक्षा में प्रवेश नहीं मिले। वर्तमान परिस्थितियों में इसे संभव बनाने का प्रयास करना चाहिए।

इसी प्रकार योग के प्रथम दो अंग यम और नियम वास्तव में धर्म शिक्षा ही है। यम अर्थात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना) ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह एवं नियम अर्थात् शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्राणिधान (ईश्वर के प्रति पूर्ण श्रद्धा व समर्पण)। ये दस यम-नियम व्यक्तिगत, समष्टिगत तथा सृष्टिगत व्यवहार को ठीक करने के सार्वभौमिक महाव्रत हैं। उन्हें आकार के रूप में प्रस्थापित करना योगशिक्षा का महत्वपूर्ण अंग है तथा सारी शिक्षा का आधार है। हमने तो योग को मात्र शारीरिक चिकित्सा का माध्यम बनाकर इसके हेतु को सीमित कर दिया है।

इनके साथ ही धर्म शिक्षा को सैद्धान्तिक रूप से समस्त विषयों के साथ जोड़ना चाहिए। जैसे अर्थशास्त्र की शिक्षा धर्म के अनुसार होनी चाहिए, यह सिद्धांत बताना चाहिए। दान और बचत अर्थव्यवहार के अनिवार्य अंग बनने चाहिए। नात-तौल में बेईमानी, मिलावट, मुनाफा खोरी, वस्तुओं का कृत्रिम अभाव करना आदि कृत्यों की पाठ्यक्रमों में भर्त्सना की जानी चाहिए।

धर्म और अधर्म को जानने का विवेक विकसित किया जाना चाहिए। अधर्म का त्याग तथा धर्म के प्रति कठोरता के लिए सदा उद्यत रहे, ऐसी शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए। धर्म की रक्षा के लिये सदैव तत्पर रहना चाहिए। विपत्ति में भी धर्म का त्याग न करें ऐसी निष्ठा विकसित करनी चाहिए। संसार में विभिन्न प्रकार के धर्म व सम्प्रदाय प्रचलित हैं। उन सभी का अध्ययन करना चाहिए। सभी में नयी समानताएँ तथा भेद हैं? उसका ज्ञान होना चाहिए। धर्म व सम्प्रदाय में क्या अंतर है? धर्म और रिलिजन में क्या अंतर है? धर्मयुद्ध क्या है? जिहाद क्या है? आज धर्म का जो स्थान है, उसे किस प्रकार बदला जा सकता है, आदि समस्त विषय धर्म पुरूषार्थ की शिक्षा होनी चाहिए। इस प्रकार धर्मपुरूषार्थ की शिक्षा, शिक्षा का सार है।

दिव्यता की अनुभूति

(डॉ. राजेन्द्र दास जी महाराज)

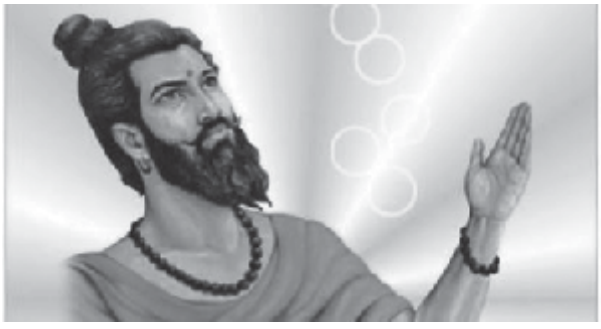

परमाणु के अस्तित्व एवं इसके बारे में विश्व को प्रथम जानकारी देने का श्रेय भारत वर्ष को जाता है। वैदिककाल के महर्षि कणाद जो कि महान दर्शनिक थे, ने प्रथम बार परमाणु सिद्धांत दुनिया के समक्ष रखा। उन्होंने यह अवधारणा भी दी कि परमाणु आपस में मिलकर अणु का निर्माण करते हैं। महर्षि कणाद की यह अवधारणा जॉन डॉल्टन, जिन्होंने परमाणु सिद्धांत के बारे में बताया, से भी लगभग 2500 वर्ष पुरानी है।

गीता के सप्तम् अध्याय में कहा गया है कि ब्रह्म के समग्र रूप को जानने के लिए ज्ञान विज्ञान दोनों को जानना चाहिए। महर्षि कणाद वैशेषिक दर्शन के माध्यम से सामान्य कण एवं ब्रह्माण्ड के रहस्य को दुनिया के समक्ष उजागर करते हैं। यह सम्पूर्ण सृष्टि एवं विश्व ब्रह्माण्ड, ठोस, द्रव्य, गैस, ऊर्जा एवं निर्वात (मन, बुद्धि, अहंकार) से बना है। परम चेतन तत्व परमात्मा इसका अस्तित्व निर्धारित करते हैं। पृथ्वी-ठोस है, जल द्रव है, वायु गैस है, अग्नि ऊर्जा है एवं आकाश मन, बुद्धि अहं का विस्तारित रूप है। यही पंच महाभूत सृष्टि का कारण है। भारत को छोड़ दुनिया के अनेक देश भौतिक विज्ञान के प्रयोगों एवं तर्क दृष्टि में उलझकर स्थूल दुनिया को ही समझ पाये हैं। सूक्ष्म का संसार दिखने वाली दुनिया से बहुत बड़ा है इसे केवल भारत के सूक्ष्म साधना एवं अध्यात्म के तपोबल से सूक्ष्म यानी ऋषि मनीषि ही जान पाये हैं। भारत की मनीषा ने ही दुनिया को यह बताया कि ज्ञान-विज्ञान का अंतिम उद्देश्य जगत के अंतिम कारण की खोज करना है। जिन्होंने साधना का दिव्य पथ अपनाया वे ही दिव्यता की अनुभूति करते हुए गुनगुना पाये-

''घटाओं की रिमझिम, पवन के तराने, लताओं के नाच और वृक्षों के गाने।
दिव्यता का आचरण और अनुसरण, अनुकरण कर स्वर्ग का करता वरण
परा अपरा का यह संसार, परा है परमेश्वर का द्वार
धर्मदण्ड के सहारे, जीवनयात्री तीरथ करता
व्यष्टि की श्वांस को लेकर परमेष्ठी का वरण करता
दिव्य है यह मानव देह, जो दिव्यता की अनुभूति करती
परमात्मा की अनुकम्पा से, भव्यता की दिव्य सृष्टि करती

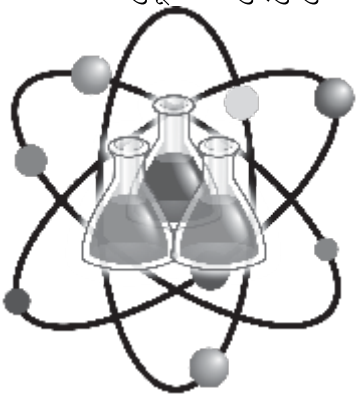

- संकलन : राजेन्द्र सिंह परमार

विज्ञान और तकनीकी का अदम्य भारत

(दीपक भसीन)

व्हाइट मैन बर्डन (अंग्रेजों का भारत को सभ्य बनाने के उत्तरदायित्व) का प्रयास एक उपनिवेश पर कब्जा करने का दार्शनिक तर्क था। सच यह है कि भारत में विज्ञान और तकनीक से लेकर हर उस विधा में उत्कृष्ट प्रदर्शन इतिहास और वर्तमान में भी है।

दिल्ली की कुतुब मीनार के सामने लगा लौह स्तम्भ चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के समय का (ई.पू. ३७५-४१३) है। उस समय के धातु शिल्प का यह अदभुत नमूना है क्योंकि दिल्ली के तापमान और वर्षा के बाद भी इतने वर्षों में इस स्तंभ में जंग नहीं लगा है। मोहनजोदड़ो (पाकिस्तान) और धोलावीरा (भारत)में पाए गए सिंधु घाटी सभ्यता स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। 2500 वर्ष ईसा पूर्व जिन सुविधाओं का उस समय की सभ्यता ने उपयोग बंद कर दिया था उसमें बावड़ी की रचनायें, स्नानागार और पानी निकासी की उत्तम व्यवस्था के प्रमाण पाए गए हैं। इसी निर्माण कला को बाद में बौद्धों ने अपने धार्मिक केन्द्रों पर अपनाया और जैन तीर्थों में भी इसी डिजाइन से बावड़ियों का निर्माण किया गया। पहाड़ को काटकर सीढ़ियाँ बनाने की कला ढांक (550-625 वर्ष ईसा पूर्व) में प्रचलित थी। स्तूप निर्माण ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में भारत में ही विकसित हुई और कालांतर में दक्षिण पूर्व एशिया तक फैली सिंधु घाटी की सभ्यता की खोज में खुदाई के दौरान जो हाथीदांत के स्केल मिले हैं वे 1500 वर्ष ईसा पूर्व के हैं और इनमें लोथल से मिले स्केल जो ईसा से 2400 वर्ष पुराने हैं। 1/16 इंच तक नाप लेने में समर्थ हैं पुरातत्व शास्त्रियों के अनुसार मोहनजोदड़ो का स्केल अत्यंत सूक्ष्म नाप लेने में समर्थ है। जो एक इंच के 0.005 वे हिस्से तक का नाप ले सकता था रोचक बात यह है कि मोहनजोदड़ो का स्केल दक्षिण भारत के प्राचीन स्केल 'हस्ता' से मिलता जुलता है जो एक सही तीन बटे आठ इंच तक का नाप लेने में समर्थ है। नाप तौल की यह प्रणाली सिंधु घाटी से कालांतर में पर्शिया और मध्य एशिया पहुंची जहाँ उनको अलग-अलग रूपों में अनपाया गया।

पुरातत्व और तमिल साहित्य के प्रमाण हैं कि वॉयज स्टील जो अत्यंत उच्च गुणवत्ता का फौलाद होता है को दक्षिण भारत में विकसित किया गया था और चेरा वंश के काल में यह रोम गया जहाँ पर इसे डमस्कस स्टील का नाम दिया गया। बुटज इस्पात एक विशेष गुणों वाला इस्पात है, जिसका विकास भारत में ईसापूर्व 300

में हुआ था। इसी इस्पात से दमिश्क इस्पात बनती थी। बुटज शब्द दक्षिण भारतीय भाषाओं में पिघलाना तथा इस्पात के लिये प्रयुक्त शब्दों से बहुत मेल खाता है। वॉयज स्टील की पुनर्रचना की सभी कोशिशें आधुनिक वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों के बावजूद असफल रही है। इसी प्रकार बिना जोड़ के धातु के गोले बनाने की कला भारत में 1589-1590 ईसा पूर्व विकसित हुई। आधुनिक धातु वैज्ञानिकों के अनुसार आज सभी तकनीकी सुविधाओं के बाद भी जोड़ रहित धातु के गोले को बड़े आकार में बनाना संभव नहीं है।

'जे शार्प,' जो कम्प्यूटर प्रोग्राम की भाषा है जो ''जावा'' और विजुअल जे++ में प्रयुक्त होती है को हैदराबाद स्थित माइक्रोसॉफ्ट इंडिया डेवलपमेंट सेंटर में विकसित किया गया। इसी प्रकार ''कोजो'' नामक कम्प्यूटर की भाषा को ललित पंत ने देहरादून में विकसित किया है। आनंद मोहन चक्रवर्ती ने खनिज तेल को नष्ट करने वाले एक सूक्ष्मजीव को विकसित किया और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की सर्वोच्च अदालत ने इसके पेटेंट का मुकदमा निपटाते हुए फैसला दिया यह प्रकृति की नहीं, आनंद मोहन चक्रवर्ती की रचना है।

गुप्त काल में विकसित चतुरंग नामक खेल बाद में शतरंज के रूप में विकसित हुआ। बौद्ध यात्रियों और सिल्क रूट के व्यापारी इसे पूर्व की ओर ले गए जहाँ से चतुरंग पर्शिया से यूरोप पहुंचा। मुस्लिम इसे उत्तरी अफ्रीका सिसली और स्पेन ले गए जहां से यह सारे विश्व में फैला। कबड्डी खेल का उश्म भारत से हुआ है सभी इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि 1500 ईसा पूर्व कबड्डी भारत में खेला जाता था। लूडो नामक खेल जो एक समय में पचीसी के नाम से जाना जाता था भारत की देन है। छठवीं शताब्दी में विकसित इस खेल को अजंता की गुफाओं के भित्तिचित्रों में इसे दर्शाया गया है। ब्रिटिश राज में यह खेल लूडो के नाम से यूरोप में फैला। सांप सीढ़ी का खेल जो वैकुण्ठा पाली के नाम से भारत में विकसित हुआ, मूलत: नैतिकता पर आधारित है जिसमें सदगुणों की सीढ़ियाँ और अवगुणों के सांप आपके लक्ष्य की प्राप्ति को कैसे निर्धारित करते हैं। ब्रिटिश राज में यह खेल इंग्लैण्ड पहुंचा और वहां से मिल्टन ब्रैडली इसे अमेरिका में स्नेक एंड लैडर के नाम से स्थापित करने में सफल रहे।

बटन भी सिंधु घाटी भी सभ्यता की देन है। 2000 ईसा पूर्व के प्राप्त बटन ज्यामितीय आकारों में कटे हाथी दांत या शंखों के वो टुकड़े हैं जिनमें बड़ी सफाई से छेद कर धागे से उन्हें वस्त्र के ऊपर लगाया जाता था। सिंधु घाटी की सभ्यता के प्राचीनतम बटन की आयु 5000 वर्ष आंकी गयी है। छपा हुआ मोटा कपड़ा भारत की देन है बारहवीं शताब्दी के लेखक हेमचन्द्र के अनुसार कपड़े पर छपाई में कमल की प्रतिकृति होने का उल्लेख है भारत के व्यापारी इसका व्यापार अफ्रीका और इंजिप्ट तक करते थे। भारत में छापे हुए कपड़े का मूल स्थान कोझिकोड़ माना गया है ताना बाना बुनने के लिए धनुष की आकृति का हथकरघा में प्रयुक्त होने वाला महत्वपूर्ण हिस्सा भारत की देन है जो धागे को उचित तनाव देता है जिससे बुनाई संभव हो सके।

प्राचीनतम भूमि जोतने वाले हल, भारत के कालीबंगा में पाए गए हैं। ईसा के पूर्व तीसरी शताब्दी में स्याही का प्रचार भारत से प्रारंभ हुआ मसि नामक एक द्रव जली हुई हड्डियों और अन्य रसायनों का एक संतुलित मिश्रण था जिसे लिखने और चित्रकारी के लिए प्रयुक्त होना भारत से प्रारंभ हुआ। ईसा 3 शताब्दी पूर्व के प्राचीन दस्तावेज इस बात के प्रमाण है कि स्याही का चलन भारत से शुरू हुआ प्राचीन दक्षिण भारत में नोकदार श्लाका को स्याही मग में डुबोकर लिखने का अत्यंत प्राचीन काल से होने के प्रमाण मिलते हैं अनेक जैन सूत्र भी स्याही से लिखे गए हैं।

1899 में सर जगदीश चंद्र बोस का

इलेक्ट्रोमेग्नेटिक रिसीवर का पेटेंट हो या मैक्रोनी के दो वर्ष पूर्व उनका रेडियो संचार पर शोध पत्र आज की संचार क्रांति की आधारशिला के रूप में भारत का योगदान स्थापित करने के लिए पर्याप्त है। शून्य, द्विघातीय समीकरण, आकाशीय गणनाएँ, शिक्षा की गुरूकुल पद्धति, मौसम और खनिज विज्ञान और धातु शास्त्र भारत की विश्व को देन है।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के विरूद्ध लोहे के सिलेंडर को राकेट के रूप में प्रयुक्त करने का श्रेय टीपू सुल्तान के काल को जाता है। दो कि.मी. तक मार करने में सक्षम ये राकेट पश्चिम में राकेट को युद्ध के लिए प्रयोग की शुरूआत बनी। शुक्राणुओं के नियंत्रण द्वारा पुरूष गर्भ निरोध का नायाब तरीका ढूंढने का श्रेय जाता है आई.आइ.टी. खड़गपुर के प्रोफेसर सुजय गुहा को जिसका पेटेंट आज चीन बंग्लादेश और अमेरिका जैसे देशों में पंजीकृत है।

शैम्पू शब्द भारत के शब्द चाँपो से निकला है जो आँवला शिकाकाई, रीठा और अन्य वनस्पतियों का यौगिक है जो झाग बनाकर शरीर विशेषत: केश की उत्तम सफाई का एक प्रामाणिक नाम बनकर उभरा है। 500 से 1000 ईसा पूर्व चरखे के भारत में होने के पुरातात्विक प्रमाण मिले हैं। मलमल जो भारत की विश्व को अनूठी देन है का उश्म ढाका है। मलमल का नाम मस्लिन इराक के मौसूल नाम के शहर से पड़ा जहाँ पर पहली बार यूरोपियन लोगों का परिचय मलमल से हुआ। नौवीं शताब्दी में सुलेमान नामक एक व्यापारी के अभिलेखों में मलमल (जिसे अरेबिक भाषा में रूह्माल कहते हैं) का स्रोत बंगाल को बताया गया है।

योग भारत की विश्व को एक अनूठी देन है। कपास की खेती और कपास से सूट और कपड़ा बनाने की कला सिंधु घाटी सभ्यता में विकसित हुई है जहां से वह मध्य एशिया तक प्रसार पाने में सफल रही। नील और जूट की खेती भी भारत की विश्व को एक महत्वूपूर्ण देन है।

भारत मार्शल आर्टस के मामलें में बहुत धनी है। मार्शल आर्टस को आयुध विद्या, वीर विद्या, शस्त्र विद्या, धनुर्वेद और तड़काप्पुक कलै अर्थात आत्मरक्षा की कला में विभाजित किया गया है। कळरिप्पयट्टु केरल से, सिलम्बम तमिलनाडु से, गटका पंजाब से, मर्दानी महाराष्ट्र से, पारी खंडा बिहार से, काठी समु आंध्रप्रदेश से, ठोडा हिमाचल प्रदेश से, लंगलों मणिपुर से, मुष्टि युद्ध उत्तरप्रदेश से, थांगता मणिपुर से, लाठी पंजाब और बंगाल के अतिरिक्त लगभग सारे देश में प्रचलित अति प्राचीन युद्ध कलाओं में से एक है।

गन्ने से शक्कर बनाने और शक्कर के शुद्धिकरण की प्रक्रिया भारत में विकसित हुई। गुप्तकाल में इस विज्ञान में अभूतपूर्व प्रगति हुई। जो कालांतर में बौद्ध भिक्षुओं और सैलानियों द्वारा चीन और मध्य एशिया तक फैल गयी। 647 ईसा पूर्व चीन से लोग भारत आकर शक्कर के शुद्धिकरण और टॉफी बनाने की कला सीखने आने के ऐतिहासिक प्रमाण हैं।

जनेश्वर मिश्र जब पेट्रोलियम मंत्री थे तो एक रोचक प्रसंग सामने आया जापान के किसी शिष्ट मंडल से दुभाषिये की सहायता से उन्होंने जब किसी समझौते की राशि के बारे में पूछा तो उन्हें बताया गया कि एक बड़ी राशि तकनीक के स्थानांतरण के लिए है। जनेश्वर मिश्र ने हंस कर दुभाषिये से कहा, इनसे पूछिए जब भारत ने जापान को शून्य दिया, योग दिया, आयुर्वेद दिया, बुद्ध दिए तो इन्होंने कितने पैसे दिए थे ?

-लेखक : दीपक भसीन

नवलय अनुबोध पत्रिका से साभार

मुख्यधारा मीडिया का हिन्दू विरोधी चरित्र

केन्द्र में भाजपा सरकार की वापसी के बाद मीडिया का बिल्कुल अलग अवतार देखने को मिल रहा । उसका ये रूप पहले से ज्यादा विचित्र है। मुख्यधारा मीडिया के बड़े वर्ग का मूल चरित्र हमेशा से हिन्दू विरोधी रहा है, लेकिन अब वह हर छोटी-बड़ी सामाजिक समस्या या टकराव को हिन्दू धर्म के साथ जोड़ने लगा है। बच्चों के खेल के मैदान और पड़ोसियों में होने वाली कहा-सुनी से लेकर शादी-विवाह जैसे पारिवारिक मामलों को ऐसा रंग दिया जा रहा है, मानो देश किसी सामाजिक संघर्ष के बीच में है। इस कोशिश में मीडिया को हिन्दुओं पर आए दिन हो रहे अत्याचारों की ढेरों खबरें दबानी पड़ती हैं।

उत्तर प्रदेश के बिजनौर में एक मदरसे से हथियारों का जखीरा निकला तो तथाकथित राष्ट्रीय मीडिया में सन्नाटा छा गया। जब चैनलों ने इसकी खबर नहीं दिखाई तो सोशल मीडिया पर लोगों ने सवाल पूछने शुरू कर दिए। जवाब में चैनलों के संपादकों ने घर छोड़कर भागे एक लड़के-लड़की की कहानी को तूल देकर ध्यान भटका दिया। आजतक समूह ने एक रणनीतिक संपादकीय फैसले के तहत बिजनौर की घटना से ध्यान बँटाने के लिए बरेली की प्रेमकथा को चटखारे लेकर दिखाया। इसके बाद लगभग सारे चैनल इस भेड़चाल में शामिल हो गए। मानो न्यूज चैनलों के स्टूडियो पारिवारिक न्यायालय में बदल गए हैं, और एंकर परिवारों के बीच सुलह करवा रहे हैं वे समाचार चैनल ही थे, जिन्होंने इस मामले को 'अनुसूचित जाति बनाम ब्राह्मण' बनाया, ताकि इसी बहाने सामाजिक टकराव पैदा किया जा सके। यह तथ्य छिपाया गया कि लड़की आजतक समूह के पत्रकारिता संस्थान में प्रवेश लेना चाहती थी। पिता ने इसके लिए मना किया। तात्कालिक रूप से सारा विवाद इसी बात से शुरू हुआ था। पत्रकारिता के पाठ्यक्रम के नाम पर आजतक समूह लाखों रूपये फीस वसूलता है। क्या यह नहीं माना जाना चाहिए कि इसी नुकसान का बदला लेने के लिए आजतक समूह ने लड़की को मंच दिया और उसके पिता की पगड़ी सरेआम उछाली ? अच्छी बात यह है कि अब लोग बहुत जागरूक हो चुके हैं। आम लोगों ने सोशल मीडिया के माध्यम से आजतक समूह के खिलाफ एक आंदोलन छेड़ दिया। चैनल के बहिष्कार की अपील की गई।

उत्तरप्रदेश के उन्नाव में एक मदरसे के कुछ लड़कों की पिटाई की खबर को भी मीडिया के इसी जाने-पहचाने वर्ग ने तूल दिया। जोर-शोर से बताया गया कि पीड़ितों से 'जय श्रीराम' बुलवाया गया। पुलिस जांच में पता चला कि बजरंग दल के जिन 3 लोगों को नामजद आरोपी बनाया गया था वे घटना के समय वहां मौजूद ही नही थे। सच सामने आने के बाद मीडिया ने आँख-कान बंद कर लिए। इतनी नैतिकता नही बची कि कम से कम सही खबर भी दिखा दे ताकि लोगों को सच पता चले। यही स्थिति राजस्थान के बूंदी में हुई, जहां संघ की शाखा लगा रहे बच्चों को दौड़ा-दौड़ाकर मारा गया। इस घटना का वीडियो भी सामने आया, लेकिन मीडिया ने खबर गायब कर दी। अमेठी में अनुसूचित जाति के एक दंपत्ति को बुरी तरह पीटा गया। उन्हें मुसलमान बनने को कहा गया। लेकिन 'दलितों का हितैषी' होने का दावा करने वाली मीडिया को यह 'लीचिंग' का मामला नहीं लगा।

मीडिया अक्सर नागरिक स्वतंत्रता का पक्षधर होने का दावा करता है, पर मामला जब हिन्दुओं से जुड़ा हो तो उसका रवैया अलग होता है। रांची में 19 साल की एक लड़की को फेसबुक पोस्ट के लिए गिरफ्तार किया गया। वह 4 दिन तक जेल में रही, लेकिन कहीं कोई चर्चा नहीं हुई। मजिस्ट्रेट ने जमानत की शर्त के तौर पर कुरान बाँटने का फतवा दिया, तब जाकर लोगों को पता चला कि इतना कुछ हो चुका है। आए दिन हिन्दुओं के नरसंहार की धमकी के वीडियो जारी हो रहे हैं, किसी आरोपी को पुलिस ने जेल भेज दिया तो मीडिया कितना हंगामा मचाएगा कल्पना की जा सकती है।

किसी हीरो-हीरोइन या मॉडल से जुड़ा कोई आपराधिक घटना हो तो चैनल खूब चटखारे लेकर दिखाते हैं, पर नागपुर में खुशी परिहार नाम की एक मॉडल की उसके दोस्त अशरफ शेख ने बेरहमी से हत्या कर दी। यह घटना चैनलों के देर रात के 'क्राइम शो' तक में जगह नहीं पा सकी। शायद इसलिए, क्योंकि ऐसी घटनाओं को दिखाने से लड़कियों में सुरक्षा को लेकर जागरूकता पैदा हो सकती है। बढ़ती जनसंख्या असंतुलन का मुद्दा देश में बहुत लोगों को परेशान कर रहा है, पर मीडिया के लिए यह 'विवादित विषय' है। केन्द्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि देश में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति है व इसे नियंत्रित करना जरूरी है। जी न्यूज और दैनिक जागरण ने इस बयान को 'विवादित बताते हुए प्रकाशित किया।

एक मनुष्य
अपने ही विचारों
का उत्पाद है.
जो वो सोचता
है, बन जाता है.

विनम्र श्रद्धांजलि

श्री अरुण जेटली जी

नये भारत के शिल्पी

श्री अरूण जेटली जी
को अभिनव प्रज्ञादीप परिवार
की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि

प्रथम पुण्य स्मरण

श्री रोशनलाल सक्सेना जी

सरस्वती शिशु मंदिर मध्यक्षेत्र के आधारस्तंभ

श्री रोशनलाल जी सक्सेना
के प्रथम पुण्य स्मृति दिवस पर अभिनव प्रज्ञादीप
हिन्दी मासिक पत्रिका परिवार की ओर से
भावपूर्ण श्रद्धांजलि

पुराने अखबारों से सृजनशीलता

(पीयूष राठौड़)

विद्यालय में ऐसा बहुत सा सामान होता है, जिसे आप बेकार समझ कर फेंक देते हैं। उन्हीं में से एक है पुराने अखबार लेकिन आप इसका इस्तेमाल कई क्रिएटिव चीजें बनाने के लिए कर सकते हैं। विद्यार्थी के साथ मिलकर वह खुश भी हो जाएंगे और उनमें सृजनशीलता और रचनात्मका का भी विकास होगा। इसके अलावा आप इसे विद्यालय के साज-सज्जा के लिए भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे विद्यालय के डेकारेशन के साथ बच्चों की क्रिएटिविटी भी उभर कर आएगी।

नवाचार के लाभ -:

- छात्रों की कल्पना को साकार करने के लिए एक मंच मिलता है।
- छात्रों में रचानात्मकता और कलात्मकता का विकास होता है।
- छात्रों में योजना कौशल और कार्य के प्रति एकाग्रता आती है।
- छात्रों के मस्तिष्क में नए-नए आइडिया और कल्पना का जन्म होता है।
- छात्रों में आत्मविश्वास और आत्म अभिव्यक्ति का विकास होता है।

प्रभाव का क्षेत्र -:

करके सीखने की आदत, क्रिया आधारित शिक्षण, मनोरंजन पूर्वक शिक्षा, बाल केन्द्रित शिक्षा, कल्पना शक्ति एवं तर्क शक्ति का विकास, उपस्थिति, सहयोग की भावना।

नवाचार के क्रियान्वयन के लिए किन संसाधनों या सामग्री की आवश्यकता -:

पुराने अखबार से कोई भी चीज बनाने के लिए आपको पुराने अखबार, कलर, कैंची, ग्लू, और रंग बिरंगे कागज चाहिए होंगे।

ऐसे करें इस्तेमाल -:

पुराने अखबार से आप ढेरों चीजें बना सकते हैं लेकिन पहले आप सोच लें कि आप क्या बनाना चाहते हैं। इसके बाद छात्रों के साथ मिलकर उसे बनाना शुरू करें। आप चाहें तो छात्रों के साथ पेपर क्राफ्ट बनाने के लिए आप पहले सरल आइडियाज उनको दे सकते हैं। आप छात्रों को सिंपल फूल बनाना भी सिखा सकते हैं। इसे बनाने में उन्हें ज्यादा मुश्किल भी नहीं होगी और वह इसे आसानी से बना भी लेंगे। अखबार की मदद से हम फोटोफ्रेम, पेन स्टेंड, थैली, जूते सूखाने, कीमती सामान की सुरक्षा, सजावटी सामान, फूल, खिलौने, गाड़ी आदि सामान बना सकते हैं।

पुराने अखबार के उपयोग -:

विद्यालय या घर में आने वाले अखबार एक बार पढ़ लेने के बाद कोई काम के नहीं रह जाते, लेकिन इसका उपयोग कई सारी सजावट की चीजें बनाने में किया जाता है।

- अखबार को लपेट लपेट कर इसकी बहुत सारी लकड़ी के जैसे मजबूत पतली-पतली डंडी बना लीजिये। इन डंडियों को लगभग 3-4 इंच में काट लीजिये। कटी हुई डंडियों में कलर कर इन्हें नया

रूप दे दीजिये। अब इन डंडियों को फोटो लगाने वाले फ्रे म में सजाइए। इसे आप शीशे पर भी लगाकर सजा सकते हैं।

- इन अखबारों की डंडियों को ऊँची नीची काट कर इसे एक पुठ्ठे में खड़े करके चिपका दीजिये और इसमें पसंदीदा रंग भरिये। यह एक डिजाइनर फूलदान या कलम करने रखने का पात्र के रूप में उपयोग किया जा सकता है।
- 3 से 4 अखबार लेकर इसे 3 भाग में थैली जैसे बनाकर चिपका दीजिये और ऊपर के भाग में दो छेद कर उसमें एक रस्सी बाँध दीजिये। आपकी हल्के सामान रखने की थैली तैयार हो जाएगी।
- अखबार की पतली-पतली पट्टी काट लीजिये, इसे मोड़कर फूल का आकार दीजिये और इसमें रंग भरिये, ऐसे ही बहुत सारे फूल बनाइये और घर में हो रहे, उत्सव के लिए इससे सजावट कीजिये, इसे किसी को उपहार में भी दे सकते हैं।
- बच्चों को क्राफ्ट सिखाने के लिए अखबार को अलग-अलग आकृति में काटिए और उसमें उन्हें रंग भरने को बोलिए इसे आप बच्चों के कमरे में सजाइए अपने पहले प्रोजेक्ट को देख बच्चे खुश हो जायेंगे।
- अखबार का उपयोग जूते सूखाने के लिए भी किया जा सकता है। गीले जूतों के अंदर अखबार को भरिये कुछ समय बाद जब अखबार गीला हो जाये तब इन अखबारों को निकालिए और दूसरे अखबार भरिये यह प्रक्रिया तब तक कीजिये जब तक जूते सूख न जाये।
- अखबार का उपयोग कीमती सामान को लपेट कर रखने में भी किया जाता है। 3 से 4 अखबार को किसी भी कीमती सामान में लपेटिये और इस तरह आप इसे एक जगह से दूसरी जगह आसानी से ले जा सकते हैं आपका कीमती सामान सुरक्षित रहेगा।

- पीयूष राठौड़, सरस्वती विद्या मंदिर राजगढ़

-: शकुन्तला देवी :-

प्रतिभाएँ गढ़ी नही जाती, पैदा होती है। इस सत्य को शब्द दे रहे हैं

(माननीय शान्तनु रघुनाथ शेण्डे)

बेंगलुरू में एक रास्ते पर एक खेल चल रहा था, एक तानकर बँधी रस्सी पर एक तरूण चल रहा था और 5-6 साल की एक लड़की ढोल पर ताल बजा रही थी। अकस्मात् जो तरूण चल रहा था उसका संतुलन बिगड़ गया वह धड़ाम से जमीन पर गिरकर बेहोश हो गया। लड़की यह देखकर घबरा गयी गत रात और आज सुबह से उसे भोजन नहीं मिला था। गिर पड़े अपने पिताजी के लिए क्या करना है यह समझ नहीं पा रही थी, उसे चिंता सता रही थी कि यदि खेल बंद हुआ तो पैसे मिलेंगे नहीं, पैसे नहीं मिलेंगे तो आज भी भोजन नहीं मिलेगा।

मैं क्या करूँ ? उसने ढोलक बजाना बंद किया और खड़ी भीड़ से कहा- सुनो, सुनो मैं आपको एक जादू का खेल दिखाती हूँ। उसने ताश की पत्तियों की गड्डी निकाली और सामने खड़े लोगों को एक-एक पत्ता हाथ में दिया। फिर पत्ते को देखने को कहा। हर एक के सामने जाकर हाथ में 'कौन सा पत्ता है' यह सही बताया। लोगों को आश्चर्य लगा कि यह छोटी सी लड़की ठीक कैसे बता सकती है। लोगों ने पैसे दिये यह लड़की अपने पिताजी के साथ सर्कस में भी गणितीय गणनाएँ अपनी तीन वर्ष की आयु से कर रही थी। आप को उस लड़की का नाम जानने की उत्सुकता बढ़ी होगी न ? उसका नाम था शकुंतला देवी। छोटी उम्र में यह होनहार-प्रज्ञावान-निडर बालिका आगे चलकर विश्वविद्यालय मानवीय संगणक बन गई जिसने अपने सभी गणितीय सवालों के सही उत्तर संगणकों की गणितीय गणना से पूर्व देकर विश्व को आश्चर्यचकित किया।

शकुन्तला देवी का जन्म पुरोगामी कन्नड़िया परिवार में 4 नवम्बर 1929 को हुआ। उसके पिताजी ने पुजारी बनना स्वीकार न करके रस्सी पर चलकर लोगों को खेल दिखाने वाला कार्य पसंद किया। अत: उन्होंने सर्कस में टेपिज पर या सिंहों को अक्रूर बनाकर, कड़ी तानकर बँधी रस्सी पर चलने वाला बनकर या जादुई खेल दिखाने वाला जादूगर बनने हेतु प्रयास किया। शकुन्तला देवी बचपन में 3 साल की उम्र से ही पिताजी के साथ सर्कस में जाती थी और पिताजी के कारनामें देखकर दंग रह जाती थी। उस समय पिताजी ने उसे कार्ड गेम्स सिखाये और अपनी पुत्री की अंकों को, संख्या को स्मृति में रखने की विलक्षण क्षमता को पहचान लिया। उसके पिताजी ने सर्कस छोड़ा और रास्ते पर उसकी गणितीय गणना की प्रगल्भ क्षमता दिखाने हेतु खेल आरम्भ किया। कोई शालेय शिक्षण न लेते हुए भी वह यह कार्य करती थी। अपनी उम्र की छठी वर्ष में उन्होंने मैसूर विश्वविद्यालय में गणितीय क्षमता का प्रदर्शन किया इसी प्रकार और अनेक संस्थानों में सफलता प्राप्त करने के बाद उन्हें अन्नामलाई विश्वविद्यालय में यश मिला। उसे मात्र 8 वर्ष की आयु में एक 'प्रज्ञावान बालिका' के रूप में स्वीकृति मिली।

गणितीय प्रज्ञा :-

सन् 1994 में वह अपने पिताजी के साथ लंदन गयी। 1950 में उन्होंने यूरोप में प्रवास किया। 1976 में उन्होंने न्यूयार्क सिटी में अपना कार्यक्रम प्रदर्शित किया। 1973 में अनेक कार्यक्रम विधि संस्थानों, विश्वविद्यालयों एवं दूरदर्शन पर प्रस्तुत किए। 27 सितम्बर 1973 को उन्होंने ब्रिटिश ब्राडकॉस्टिंग कॉरपोरेशन के राष्ट्रीय प्रसारण कार्यक्रम में बॉब गेल्गिस के साथ कार्यक्रम दिया जिसमें उन्होंने उसके द्वारा किये गए कठिन से कठिन

गणितीय सवालों का सही उत्तर देकर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। 1977 में विश्वविद्यालय गणितज्ञों की सभा में जब 201 अंकों की संख्या का वर्गमूल मात्र 50 सेकेण्ड में उन्होंने बताया, जबकि उस समय के तेज संगणक ने भी 62 सेकेण्ड का समय लिया था, तब सभी सदस्यों ने खड़े होकर उनके प्रति सम्मान प्रकट किया। यह कार्यक्रम मेथाडिस्ट यूनिवर्सिटी में हुआ था। शकुन्तला देवी का उत्तर था 546,372,898 जिसे यूएस ब्यूरो ऑफ स्टैण्डर्ड के यूनिवैक 1101 संगणक ने जिसके लिए गणितीय गणना करने के लिए एक विशेष कार्यक्रम बनाकर देना पड़ा था, तब सही उत्तर की पुष्टि हुई। 17 जून 1980 को कम्प्यूटर डिपार्टमेंट ऑफ इंपीरियल कॉलेज, लंदन ने एट रैण्डम दो से 13 अंकों की संख्याओं का गुणनफल पूछा तो उन्होंने मात्र 28 सेकेण्ड में बताया। इस घटना को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में दर्ज किया गया। इसके लेखक स्टीवन स्मिथ ने कहा कि यह परीक्षाफल इसके पूर्व दर्ज किये गए किसी भी रिकार्ड से बहुत उच्च कोटि का है इसका वर्णन अविस्मरणीय है।

1988 में वह यू.एस. में अपनी योग्यताओं का अध्ययन करने मनोविज्ञान के प्रोफेसर आर्थर जेन्सन के पास गयीं। जेन्सन ने उनकी योग्यता की परीक्षा बड़ी बड़ी संख्याओं की गणना करने के लिए देकर की। जेन्सन ने 1990 में अपना शोध एकेडमिक जनरल ऑफ इन्टेलीजेंस में दर्ज किया है।

भारत में वापस आकर विदेशों में प्राप्त यश और कीर्ति सुदूर फैली होने के कारण अपने गणना कौशल के कारण उन्होंने भारत में भी प्रसिद्ध गणितज्ञ की ख्याति अर्जित की। भारत में उन्हें मौखिक गणना विशेषज्ञ के साथ एक और विषय ऐस्ट्रोलॉजी (ज्योतिष) विशेषज्ञ गणनाकार के रूप में भी प्रसिद्धि मिली। वह व्यक्तिगत समस्याओं का हल गणना के माध्यम से करती थी। अपनी मौखिक गणना की कला सिखाने हेतु उन्होंने पुस्तकें भी लिखी।

पजल्स टू पजल यू - यह नवोदित गणितज्ञों के लिए एक प्रेरणादायी पुस्तक है। यह पुस्तक श्रेष्ठ वाचनीय पुस्तक है, जो गणितीय क्षेत्र में कुछ गुणिताओं को जानकर प्रवीणता प्राप्त करने हेतु अध्ययनशील है उनके लिए है, ऐसा आलोचकों ने कहा।

फिगरिंग-द ज्वाय ऑफ नम्बर्स, नम्बरिंग मेड इजी, ऐस्ट्रोलॉजी फॉर यू, द वर्ल्ड ऑफ होमो सेक्सुअलटी सन् 1977 में लिखी गई जो 2005 में श्रेष्ठ 100 पुस्तकों की सूची में से एक थी।

परफेक्ट मर्डर, ए नॉवेल 1977 में लिखी जो उनकी साहित्यिक रचना थी जिसका अनेक प्रांतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ। इसके बाद कुकिंग के लिए एक पुस्तक लिखी।

सम्मान तथा पुरस्कार :-

Distinguished Women of the Year Award - 1969 में स्वर्ण पदक के साथ फिलिपाइन्स विश्वविद्यालय से प्राप्त किया। 1988 में शकुन्तला देवी को वाशिंगटन डीसी में रामानुजन मैथेमेटिकल जीनियस अवार्ड - भारतीय अमेरिकन राजदूत से प्राप्त हुआ।

1995 में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में शकुन्तला देवी का नाम दर्ज किया गया। 13 अंकों की दो संख्याओं का गुणनफल संगणक से भी जल्दी उत्तर देने के लिए यह सम्मान था।

2013 में उनको लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से मुम्बई में सम्मानित किया गया। 4 नवम्बर 2013 को मरणोपरांत गूगल द्वारा उनके 84वें जन्मदिवस पर गूगल डूडल सम्मान से उन्हें याद किया गया। शकुन्तला देवी किसी भी विश्वविद्यालय में पढ़ने नहीं गई। दैवी शक्ति के आधार पर वाल्यावस्था की होनहार बालिका आगे चलकर विश्वविद्यालय गणितज्ञ बन गई। उन्होंने एजुकेशनल फॉउण्डेशन ट्रस्ट नाम का एक न्यास गणितीय, ज्योतिष शास्त्र और दर्शन शास्त्र के अध्ययन हेतु बेंगलुरू में स्थापित किया। 3 अप्रैल 2013 को श्वांस लेने की कठिनाई के कारण उन्हें बेंगलुरू के अस्पताल में भर्ती किया गया था परन्तु किडनी खराब होने के कारण 21 अप्रैल 2013 को उन्होंने अंतिम साँस ली।

-(विद्याभारती प्रदीपिका से साभार)

विद्यामंदिर एवं समाज समर्पित प्रधानाचार्य समय की माँग

(श्री विजय कुमार नड्डा)

आज समाज में छात्र के लिए गला-काट प्रतियोगिता, संस्कार से परे विद्यालयों का समुचित व्यापार जैसा व्यवहार सभी के लिए विषय बना हुआ है इस सब को समुचित स्वरूप कौन दे सकता है इस विषय पर चिन्तन प्रस्तुत कर रहे हैं उत्तरक्षेत्र के संगठन मंत्री श्री विजय कुमार नड्डा बदलते समय के साथ प्रत्येक जीवनमान इकाई को बदलना पड़ता है। एक शाश्वत सत्य है कि समय के गतिमान प्रवाह के साथ कदम मिलाकर जो नहीं चल पाता वह इस दुनिया में पीछे रह जाता है।

इसको यूँ कहा जा सकता है कि समय उसको खेल से बाहर कर देता है। आज की परिस्थिति में समय के साथ कदम ताल करने वाले प्रधानाचार्य को सबसे अधिक परिश्रम करना पड़ता है। आज का युग धर्म है कि हमें अपने कर्मक्षेत्र में अपने परिश्रम, प्रतिभा और परिणाम के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज करानी ही होगी। क्योंकि आज का युवा प्रधानाचार्य पैकेज अच्छा चाहता है (इसमें कोई गलत बात भी नहीं) और सम्मान भी प्राचीन गुरू की तरह चाहता है। इस सब में दु:खद पहलू यह है कि युवा प्रधानाचार्यों में छात्र, समाज तथा राष्ट्र समर्पित जीवन जीने की मानसिक स्थिति और सिद्धता बहुत कम देखी जा रही है। शिक्षा क्षेत्र में अपने गत तीन वर्षों के अनुभव के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि युवा पीढ़ी के प्रधानाचार्य को छात्रों एवं समाज में सम्मान का स्थान पाने के लिए बहुत परिश्रम करना होगा। इसके लिए अपनी दृष्टि पूर्णत: बदलनी होगी। आचार्य का कार्य अत्यंत श्रेष्ठ और नौकरी से बहुत ऊपर है। पद प्रतिष्ठा व पैसा उसके लिए समर्पित जीवन का सहज परिणाम होने वाला है। इसके विपरीत इन सब के पीछे दौड़ने से पद और पैसा तो शायद मिल भी जाए, लेकिन प्रतिष्ठा तो उसके लिए दिवास्वप्न मात्र बनकर रह जाएगी। प्रधानाचार्य को समझना होगा कि राष्ट्र का भावी भविष्य उसके हाथों से हो कर निकल रहा है। प्रधानाचार्य को एक-एक छात्र को तराशने, उसके अंदर के महामानव को प्रकट करने में सक्षम राष्ट्र शिल्पी आचार्य भैया व दीदियों का नेतृत्व करना होगा। आज के सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश में छात्र एवं समाज समर्पित जीवन जीने वाले आचार्य भैया/दीदियों का समूह निर्माण करना प्रधानाचार्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती होती है। यह सब करने के लिए पहल उसे स्वयं से करनी होती है। प्रधानाचार्य को नौकरी की आत्मघाती मानसिकता से बचना होगा। अंग्रेजों के समय पनपी यह नौकरी की मानसिकता अत्यंत विचित्र है। हम अपने घर में मजदूर लगाते हैं तो उससे बहुत कुछ चाहते हैं और हम कहीं काम करते हैं तो हमारी दृष्टि और तर्क पूर्णत: बदल जाते हैं। नौकरी की मानसिकता में दोनों कर्मचारी और मालिक एक दूसरे को चकमा देने में दिमाग लगाते हैं। वास्तव में अंग्रेजों के समय क्योंकि हमें अंग्रेजों की नौकरी करनी पड़ती थी और अग्रेजी से लोग नफरत करते थे इसलिए उनके प्रति हमारी मानसिकता विकृत होना स्वाभाविक ही था। उस स्थिति में हम अंग्रेजों को छकाने और अंग्रेज हमारा खून चूसने पर स्वयं को शाबाशी देता था। हमें यह स्वीकार करना होगा कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी इन नौकरी की मानसिकता से ऊपर न उठ पाने से हमारा बहुत अहित हुआ है। नौकरी में व्यक्ति अपनी शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक प्रतिभा का सीमित (जितने से काम चल जाए) ही उपयोग करता है। अपने पिछड़ने के लिए सारी कायनात को दोषी ठहराता रहता है। दुर्भाग्य से आजादी के बाद भी शासन और नियोक्ता के प्रति हमारी मानसिकता नहीं बदली है। हमारे देश में कम्युनिस्टों ने इस सोच को और हवा पानी दिया। सरकारी नौकरी लगते ही व्यक्तिअपने कर्तव्य को भूल कर अधिकारों की पिटारी खोल कर बैठ जाता है। परिणामस्वरूप धीरे-धीरे सरकारी क्षेत्र सब जगह घाटे में

जाने लगता है। मजबूर होकर सरकार को सब जगह से अपने हाथ खींचने पड़े। कम्युनिस्टों द्वारा प्रेरित अधिकारों की रट लगाने वाला सामान्य व्यक्ति बेचारा फिर निजी क्षेत्र में शोषण की भेंट चढ़ जाता है। स्थिति न्यूनाधिक 'न खुदा ही मिला न विसो सनम...' वाली ही हुई। कर्मचारी और नियोक्ता दोनों को समग्रता से सोचना होगा। दोनों को समझना होगा कि एक दूसरे के बिना दोनों अधूरे हैं। युग परिवर्तनकारी प्रधानाचार्य बनने में सहायक बिंदु :- वैसे तो सफल प्रधानाचार्य बनने के लिए एक लम्बी साधना की आवश्यकता होती है। इसके लिए कोई शॉर्टकट नहीं हो सकता। तो भी कुछ बिन्दु इसमें सहायक अवश्य हो सकते हैं।

प्रधानाचार्य अपनी साधना का प्रारम्भ विद्यालय में सबसे पहले आना और सबसे बाद में जाने से कर सकता है। सभी आचार्य भैया/दीदियों तथा अन्य सहयोगियों कर्मचारियों को टीम के रूप में कार्य करने की प्रेरणा दे। उसको केन्द्र बिन्दु बनना होगा उसे शिशु/विद्या मंदिर परिवार के प्रमुख के रूप में सभी का मन जीतना होता है। सफल प्रधानाचार्य बनने के लिए सहयोगी टीम के मन में सम्मान मिश्रित भय रहना आवश्यक है। प्रत्येक छात्र के जीवन में रूचि लेना और अभिभावकों से निरन्तर सम्पर्क में रहना प्रधानाचार्य के कार्य को बल प्रदान करता है। शिशु/विद्या मंदिर एवं छात्र विकास के लिए निरंतर प्रयासरत रहना, नए-नए प्रयोग करते रहना सफल प्रधानाचार्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। शिशु/विद्या मंदिर को समाज जागरण का एवं सामाजिक चेतना का केन्द्र बनना आवश्यक होता है। अपनी प्रशंसा स्वयं करने से बचते हुए अपने कार्यों को बोलने देना चाहिए। प्रधानाचार्य बहुविध कार्यों के योग्य सम्पादन के लिए उसे कल्पक, योजक एवं कुशल प्रशासन बनना होता है। दैनिक, साप्ताहिक एवं मासिक कार्यों की सूची बनाकर उनके सम्पादन पर ध्यान केन्द्रित करना होता है। विद्यालय के कलेण्डर पर नजर जमाए रखनी पड़ती है। समाज से योग्य प्रतिभा सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित लोगों को छात्रों के समक्ष निरंतर लाते रहने से एक ओर जहाँ छात्रों के समुचित विकास को बल मिलता है वहीं विद्यालय के लिए सहयोगी वर्ग खड़ा होता है। प्रबंधन समिति से तालमेल बैठाना प्रधानाचार्य के कार्य की कुशलता का परिचायक होता है।

लक्ष्य समर्पित जीवन सफल प्रधानाचार्य के लिए पूर्व शर्त लक्ष्य समर्पित व्यक्ति के लिए कुछ भी असम्भव नहीं होता है। संघ संस्थापक पूज्य डॉक्टर साहब हेडगेवार जी कहते थे कि हम महान लक्ष्य को समर्पित लोग साधारण लोग हैं। महान लक्ष्य कब हम में महानता के अंश उत्पन्न कर देता है हमें पता ही नही चलता है। यह सत्य भी हमें स्वीकारना होगा कि हमारे समाज के अन्त:करण में सेवा परमोधर्म: की धारणा अत्यंत गहरी बैठी है। समाज समर्पित जीवन जीने वाले आचार्य व प्रधानाचार्य आज भी समाज जीवन को दिशा देने में सक्षम है और दिशा भी दे रहे हैं। विद्याभारती की पाठशाला से निकले सैकड़ों प्रधानाचार्य आज राष्ट्र एवं समाज को दिशा दे रहे हैं। विद्याभारती के क्षेत्र से भी बाहर अनेक प्रधानाचार्य समाज और राष्ट्र जीवन के लिए श्रद्धा, आशा व विश्वास का केन्द्र बने हुए हैं। यह सब उनकी लम्बी साधना के फलस्वरूप हो सका है। ऐसा विराट व्यक्तित्व पाने के लिए प्रधानाचार्य को अपने कार्य को सही अर्थों में अक्षरश: पूजा मानना होगा। एक बार दृष्टि बदली तो फिर सारा परिदृश्य बदल सकता है। किसी ने ठीक ही कहा है ''नजरें बदलीं तो नजारे बदल गए। किश्ती बदली तो किनारे बदल गए।'' प्राचीन काल में हमारे प्रधानाचार्य केवल विद्यालय ही नहीं बल्कि पूरे समाज के प्रमुख व आदरणीय हुआ करते थे। हमें यह भी समझना होगा कि यह आदर उनके विराट व्यक्तित्व के कारण ही समाज में प्राप्त था। राजा भी उनसे गुरू मानकर समय लेकर मिला करते थे। लोग घर परिवार नौकरी से लेकर जीवन की सब समस्याओं के हल के लिए प्रधानाचार्य की ओर देखते थे। आज प्रधानाचार्य को वह सम्मान करना ही होगा। केवल अपने लिए ही नही बल्कि समाज के स्वरूप एवं दीर्घ जीवन के लिए यह अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान में समाज में जितनी भी समस्याएँ या परेशानियाँ हैं जैसे बालात्कार, भ्रष्टाचार, टूटते परिवार या तेजी से फैलते वृद्धाश्रम से सब माँ की गोद, अध्यापक की कक्षा या सन्यासी की ध्यान साधना की असफलता ही तो है। इन सबको ठीक करने के लिए शुरूआत हमारे आचार्य को छात्र की अँगुली पकड़ कर जीवन के नए पाठ की नई पद्धति से पढ़ाने से करनी होगी। क्योंकि माँ, सन्यासी, राजनेता से लेकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अच्छा या खराब प्रदर्शन करने वाले लोग हमारे अध्यापकों के व्यक्तित्व के विस्तार या प्रकटीकरण मात्र ही तो हैं

प्रधानाचार्य का दायित्व एवं प्रबंध कुशलता

(मा. नरेन्द्रजीत सिंह रावल)

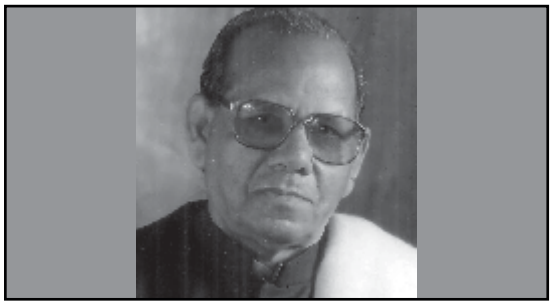

अनेक वर्षों तक हलवासिया विद्या विहार भिवानी में प्रधानाचार्य का दायित्व सफलता पूर्वक निभाते हुए विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के महामंत्री के पद पर आसीन रहे मा. नरेन्द्रजीत सिंह रावल की अनुभव पेटिका से प्रस्तुत है प्रधानाचार्य के सफलतम नेतृत्व हेतु कुछ बिन्दु। बहुत ध्यान से इनको ग्रहण करें। मानक परिषद 'माप' की मूल्यांकन प्रक्रिया के चार प्रमुख आधारों में से एक हैं।

प्रधानाचार्य विद्यालय रूपी शिक्षा संस्था का एक प्रमुख नेतृत्वकर्ता होता है। संस्था सक्षम कुशल एवं योग्य प्रधानाचार्य के नाम से ही पहचानी जाती है। वह शिक्षा संस्था का प्रारम्भिक कक्षा से उच्चतम कक्षा तक के सभी छात्र-छात्राओं का आदर्श प्रेरक एवं उत्तरदायित्व पूर्ण आचार्य है। वह सम्पूर्ण शिक्षक टोली एवं प्रशासनिक सहयोगियों का मुखिया है तथा सब के कार्यों एवं व्यवहार का जवाबदेय भी है। एक अध्यापक किसी एक कक्षा का कक्षाचार्य होता है। वह दो तीन कक्षाओं में कोई एक या दो विषय पढ़ाता है। वह मुख्यत: केवल उन कक्षाओं में अपने शैक्षिक कार्य का उत्तरदायी है। उसका दायित्व एवं जवाबदेही इतने तक सीमित है परन्तु प्रधानाचार्य उस शिक्षण इकाई के सब कार्यों के प्रति उत्तरदायी है। सभी विद्यार्थियों का सम्यक विकास हो, पाठ्यक्रम समय पर भली भाँति सम्पन्न हों, मेधावी एवं मन्दगति से चलने वाले सभी विषयों की उचित शिक्षण व्यवस्था बालक-बालिकाओं के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से विद्यालय में पाठ्य व सहपाठ्य गतिविधियों की योजना बनाना इस हेतु सभी पाठ्य व सहपाठ्य सामग्री, उपकरण, उपस्कर जुटाना तथा उनका प्रयोग उचित रूप में हो। इन सब की रखरखाव की व्यवस्था करना, कक्षा कक्ष की स्वच्छता, बालक बालिकाओं के लिए उपर्युक्त उपस्कर की व्यवस्था, विद्यालय में विद्युत व पानी भैया बहनों के लिए शौचालस की व्यवस्था व उसकी स्वच्छता की जाँच उचित ढंग से करना। विद्यार्थियों के विद्यालय लाने एवं वापस ले जाने की परिवहन की उचित एवं सुरक्षित व्यवस्था।

विद्यालय समय पर प्रारम्भ हो, वंदना एवं संस्कार पक्ष का सबलता से विकास, छात्र-छात्राओं के पंचकोशीय विकास की दृष्टि से विद्यालय के पाठ्य व सहपाठ्य गतिविधियों की भी उचित व्यवस्था हो। ज्ञानात्मक विकास हेतु समृद्ध पुस्तकालय हो वहाँ पुस्तकों का लेन-देन व स्वाध्याय की सुविधाजनक व्यवस्था हो। प्रयोगशालाएँ मात्र केवल शोभा व दर्शनीय वस्तु न होकर वहाँ उचित ढंग से प्रयोग करने की व्यवस्था हो।

शारीरिक विकास हेतु विद्यालय में खेलों के लिए साधन एवं उपस्कर उपलब्ध हों जो मात्र दर्शनीय न होकर विद्यार्थियों एवं आचार्यों के विकास के लिए क्रियात्मक रूप से प्रयोग में आने वाले साधन हों। खेलों के माध्यम से छात्र-छात्राओं का विकास हो। छात्र-छात्राओं के लिए पीने का स्वच्छ पानी मिले, स्वास्थ्य की दृष्टि से उचित प्राथमिक उपचार हेतु डॉक्टर व डिस्पेंशरी की सुविधा हो।

आज के युग में तकनीकी ज्ञान हेतु कम्प्यूटर आदि संसाधनों आवश्यक हैं। अत: वे उपलब्ध हों तथा उनका ठीक प्रकार से उपयोग हो। रटन्त शैली में परीक्षा के लिए पढ़ाना मात्र न होकर विषय को छात्र-छात्राओं को ठीक प्रकार से समझ हो सके इस दृष्टि से इन उपकरणों एवं

संसाधनों का नियमित प्रयोग हो। सम्पूर्ण विद्यालय टोली प्राचार्य, आचार्य, कर्मचारी वर्ग अपने-अपने दायित्व के प्रति पूर्ण निष्ठा रखें व विद्यालय के प्रति समर्पित हों। यह टीम भावना का निर्माण करना प्रधानाचार्य का ही दायित्व है। TEAM अर्थात् Totally Engrosed in Achievement Mission.

प्रधानाचार्य के नेतृत्व में इस प्रकार की टोली का विकास हो कि कार्यालय की लेखा व्यवस्था व रिकार्ड का पूर्णरूपेण लिखित रूप से फाइलिंग की जाए। नियमित रूप से प्रशासनिक विभाग, शिक्षा विभाग, परीक्षा विभाग व बोर्ड से सम्बंधित विषयों पर चर्चा कर उनके पत्रों का उचित एवं संतुष्टिपूर्ण उत्तर दिया जाए तथा प्रशासनिक तंत्र की आवश्यकताएँ एवं अपेक्षाओं की यथा सम्भव समय पर पूर्ति की जाए। यह सब जवाबदेही भी प्रधानाचार्य की होती है।

प्रधानाचार्य केवल विद्यार्थियों के प्रधानाचार्य मात्र नहीं हैं। वे सम्पूर्ण समाज के प्रति उत्तरदायी एवं जिम्मेदारी इकाई है। आओ, हम सब इसका स्मरण कर इस दायित्व को भलीभाँति सम्पन्न करने के योग्य बनें। शिक्षा विभाग, प्रशासन, प्रबंध समिति के दायित्वों की चिंता करें जो कार्य श्रद्धापूर्वक किया जाता है व परिणामकारी प्रभावी एवं आदर्श होता है।

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् प्रधानाचार्य के दायित्व एवं कार्यकुशलता का मूल मंत्र है। यदेव विद्यया करोति श्रद्धायोपनिजदा तदेववीर्यवत्तरं भवति। जो भी कार्य श्रद्धापूर्वक, उपासना भाव से एकाग्रता होकर ज्ञानपूर्वक अर्थात् समझ के साथ किया जाता है वह बहुत परिणामकारी तथा शक्तिदायी रूप हो जाता है।

What ever is done with knowledge, faith and attitude of upasana becomes most vigorous and fruitful. It gives the best result.

प्रधानाचार्य के कार्य का स्वरूप -:

- मातृसंस्था एवं प्रबंध समिति, शिक्षा विभाग के नियमों को समझना तथा तदनुरूप कार्य की योजना करना।
- विद्यालयों छात्रों की परीक्षा दृष्टि से जिस बोर्ड में सम्बद्ध है उसके नियमों व उपनियमों को समझ कर ठीक प्रकार से उनकी पालना हो, यह ध्यान करना तथा तदनुरूप व्यवस्था करना।
- विद्यालय वातावरण यथा स्वच्छता, जल-व्यवस्था, लघुशंकालय व शौचालय की स्वच्छता व सुन्दरता दिखे व भैया व बहिनों के लिए अलग-अलग व्यवस्था हो।
- संस्कारक्षम व्यवस्थाएँ, सूचनापट, प्रेरक पत्रिका, समाचार दर्शन की व्यवस्था देना। इन सब कार्यों में आचार्य एवं भैया-बहिनों को सहभागी करना, वन्दना व्यवस्था को प्रभावी बनाना।
- विद्यालय के सभी आचार्य वर्ग, कर्मचारी वर्ग एवं विद्यार्थियों के साथ स्नेहपूर्ण परिवार भाव रखना परन्तु किसी भी स्तर पर अनुशासन हीनता को स्वीकार कदापि नहीं करना चाहिए।
- विद्यालय क्रिया-कलाप पूर्व निर्धारित हो तथा उनकी यथा समय पूर्व तैयारी हो यथा समय सम्पन्न हों एवं पूर्व बनाए योजनानुसार कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद समीक्षा हो।
- वार्षिक पंचांग बनाना तदनुसार व्यवस्थाएँ बनाना तथा सभी पाठ्य व सहपाठ्य गतिविधियों को पंचांग में स्थान समय आदि की व्यवस्था करना तदनुरूप कार्य पाठ्य सहपाठ्य प्रभावी ढंग से सम्पन्न हो यह देखना।
- छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से, आचार्यों के विकास की दृष्टि से कार्यक्रमों की योजना करना। विज्ञान व भूगोल आदि विषयों में प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम की उचित व्यवस्था करना।
- समाचार पत्र पढ़ना, प्रेरक समाचार विद्यार्थियों के ध्यान में लाना इस उद्देश्य हेतु उन्हें बोध पट्ट पर लिखना।
- अध्यापक/आचार्य भैया-बहिनों के विश्राम की दृष्टि से व स्वाध्याय आदि हेतु अध्यापक कक्ष पुरूषों व महिलाओं हेतु अलग व्यवस्था बनाना।
- अध्यापक कक्ष के लिए अलग से समाचार व शैक्षिक पत्रिकाओं की व्यवस्था करना।

- प्रत्येक सहपाठ्य कार्यक्रम की पूर्व योजना हेतु सम्बंधित अध्यापक वर्ग के साथ बैठना, दायित्व बाँटना व कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद पुन: बैठकर मूल्यांकन करना।
- समय सारिणी बनाना, विज्ञान प्रयोगात्मक कार्य परीक्षा मूल्यांकन की योजना बनाना। अध्यापकों व अभिभावाकों तथा विद्यार्थियों की इस सम्पूर्ण मूल्यांकन योजना में सहभागिता करवाना तथा उन्हें पूरी जानकारी प्रदान करना।
- प्रत्येक स्तर पर परीक्षा हो जाने के बाद विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के साथ अलग-अलग कार्य समूह में बैठना योजना बनाकर परीक्षा परिणाम का मूल्यांकन करना।
- आचार्य अपने पाठ्य विषय की तैयारी करके आयें। पाठ/चैप्टर पूर्ण होने पर अपने विद्यार्थियों की जाँच करना, जिन्हें कोई बिन्दु समझ में नहीं आया हो तो उन्हें पुन: समझाने का प्रयास करना।
- तात्कालिक लघु परीक्षाओं के माध्यम से यह परख लेना कि पाठ उन्हें समझ में आ गया है या नहीं।
- गृहकार्य यदि दिया जाता है तो उसका मूल्यांकन व निरीक्षण करना।
- परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच कर छात्रों के द्वारा हुई भूलों/अशुद्धियों के प्रति उन्हें सचेत करना।

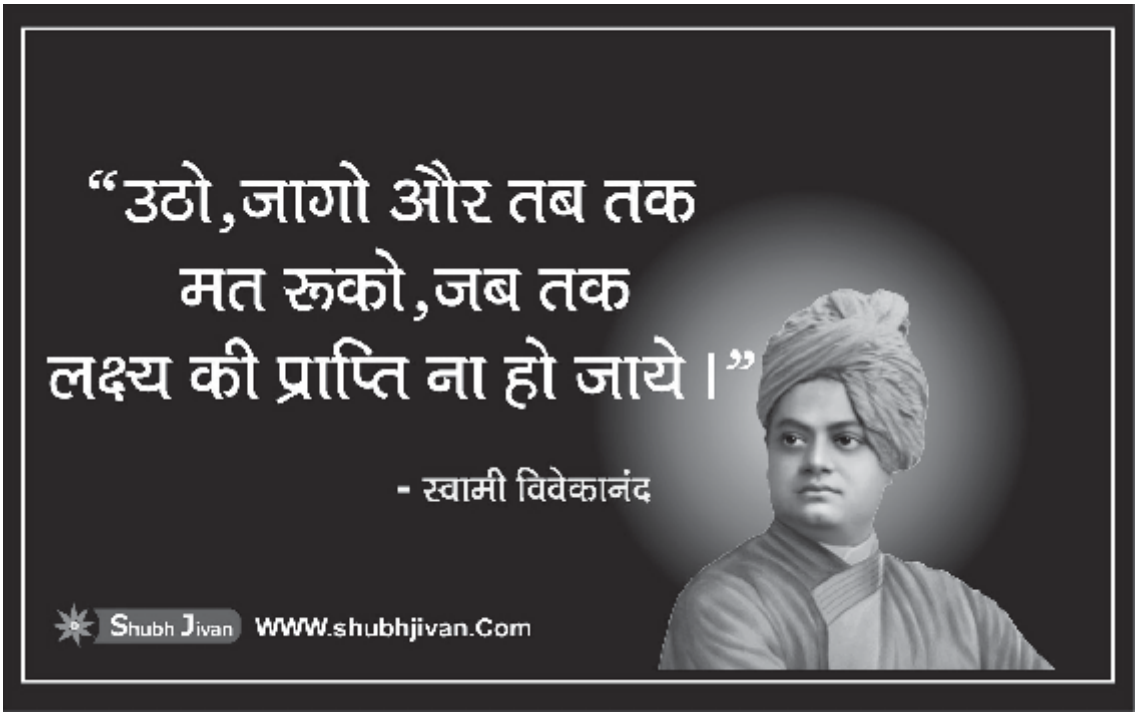

गुणवत्ता के आधार पर ही पालक के मन में प्रभाव छोड़ सकते हैं : शर्मा

एसएमएफ शिक्षण संस्थान पुणे के द्वारा विद्यालय का हुआ अवलोकन

खो-खो प्रतियोगिता संपन्न

सरस्वती शिशु मंदिर सरस्वती पुरम अशोक नगर में आज कक्षा 4 व 5 के भैया बहनों की मातृ गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती साधना जी शर्मा (प्रदेश कार्यकारिणी भाजपा सदस्य)का आतिथ्य प्राप्त हुआ। आज आपने अपने उद्बोधन में माताओं के समक्ष वर्तमान चुनौतियों का सामना करने व भैया बहनों को उस योग्य बनाने पर बल दिया। इस कार्यक्रम में भैया बहनों की प्रस्तुति के साथ-साथ माताओं बहनों को छोटे छोटे खेल प्रतियोगिता कर उनको पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती कल्पना शर्मा तथा भूमिका विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री महेश जी वर्मा द्वारा रखी गई। इस अवसर पर 104 माताओं बहनों ने भाग लिया

खेलकूद प्रतियोगिताओं में बच्चों ने दिखाया हुनर

सरस्वती शिशु मंदिर में राष्ट्रीय खेल दिवस मनाया

संस्कृत भाषा सभी भाषाओं की जननी है : शर्मा

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

करताना. गांव सीपाके में स्थित चिचोटकुटी आश्रम में स्थित स्वामी विवेक वैदिक विद्या समिति द्वारा संचालित वैदिक विद्यापीठ में महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान भोपाल के अनुसार संस्कृत सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सात दिवसीय इस आयोजन में आचार्यों द्वारा मुख्य स्थानों पर तिलक करना, अमरकोष और गीता कंठ पाठ स्पर्धा, गीतोपनिषद कार्यक्रम, अष्टाध्यायी और धातुरूप कंठ पाठ स्पर्धा, संस्कृत विषय है या भाषा पर व्याख्यान हुए। सात दिवस समापन कार्यक्रम में चारों वेदों, संस्कृत ग्रंथों का पूजन और ध्यान करके मंत्रों का वाचन भी किया गया, जिसका संचालन व्याकरणाचार्य सतीश ओझा ने किया। अतिथियों का परिचय विद्यालय के प्राचार्य गगन देवड़ा ने कराया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी जानुपुरी इन्दौर और मुख्यवक्ता निरंजन शर्मा थे। मुख्यवक्ता ने बताया कि ब्रह्माण्ड का ही पूर्व वेद और संस्कृत टिका रहता है। अतः हमें मानना है कि हमारी मातृभाषा सभी भाषाओं की जननी है। मातृभाषा संस्कृत का यह वैदिककालीन देव भूमि होने जा रही है। जहां विश्व साहित्य का पूजन ही नहीं, अपितु अध्ययन भी होगा। कार्यक्रम में 15 जिलों के बच्चों के अभिभावक शामिल हुए। मातृशक्ति ने वेदों व संस्कृत ग्रंथों की रक्षा शुरू करके, संस्कृत भाषा की रक्षा करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर लगभग 150 गणमान्य नागरिक उपस्थित हुए। आभार ज्योतिषाचार्य डॉ. गोविंद माहेश्वरी ने किया।

संस्कृत संभाषण शिविर का आज होगा शुभारंभ

गंजबासौदा@ पत्रिका ब्यूरो
गांधी चौक स्थित सरस्वती शिशु मंदिर में संस्कृत संभाषण शिविर का शुभारंभ रविवार को किया जाएगा। बताया गया कि यह प्रशिक्षण शिविर संस्कृत भारती के तत्वावधान में दस दिवस के लिए आयोजित किया जा रहा है। यह 18 अगस्त से शुरू होकर 27 अगस्त तक किया जा रहा है।

इस शिविर में नियमित दो घंटे के अभ्यास में संस्कृत सिखाई जाएगी। इसके साथ ही लोग इस शिविर में शामिल होकर संस्कृत सीख सकते हैं। शिविर शाम 5 बजे से 7 बजे तक आयोजन किया जाएगा। शिविर का शुभारंभ विशेष अतिथि राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान अनौपचारिक केन्द्र नई दिल्ली के डॉ. योगानंद झा सहित स्थानीय नागरिक होंगे।

सरस्वती विद्या मंदिर में प्रांतीय खेलकूद समारोह का आयोजन

हरदा, 30 अगस्त. सरस्वती विद्या मंदिर में 32वां प्रांतीय खेलकूद समारोह हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की स्मृति के साथ प्रारंभ हुआ. उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता लाल बहादुर शास्त्री व्यावसायिक अध्ययन महाविद्यालय के निर्देशक राजीव खरे ने की. इस अवसर पर उन्होंने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा की खिलाड़ियों को हमेशा अपने कोच की आज्ञा मानना चाहिए. अपने व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों को साझा किये.

इस अवसर पर विद्यालय द्वारा खेलों के जीवनस्मृति योगदान के लिये प्रकाश नवले का शॉल श्रीफल से सम्मान किया तथा एक खिलाड़ी एवं आदर्श कोच के रूप में दादा की सेवाओं को याद किया गया. स्वागत भाषण प्राचार्य संजय उपाध्याय ने दिया. इस प्रतियोगिता में मध्यभारत प्रांत के लगभग 150 विद्यार्थी भाग ले रहे है.

सराय भवन में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

खिलचीपुर. सरस्वती स्कूल द्वारा सराय भवन में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने मनमोहक प्रस्तुतियां देकर मौजूद लोगों का मन मोह लिया। साथ ही प्रश्न मंच, रंगोली, चित्रकला आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। जिसमें विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर सुरेन्द्र भण्डारी, गजेन्द्रसिंह खींची, राजवीरसिंह, हिमांशु गुप्ता बालमुकुंद कसेरा, रामबाबू व्यास, मोहनलाल सोलंकी, विजय सिंह दांगी व प्राचार्य विवेकसिंह उमठ आदि मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन संजय कौशिक ने किया। इसके अलावा पीपल्याकलां सरस्वती स्कूल में भी कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व धूमधाम से मनाया गया। जिसमें गांव के मुख्य मार्गों से चल समारोह निकाला गया। जिसका समापन बाबा बालापुरवाला आश्रम में हुआ। इस अवसर पर समाज अध्यक्ष जगदीश दांगी, प्रभारीप्राचार्य अजयसिंह सहित स्कूल स्टाफ मौजूद था।

सरस्वती विद्या मंदिर में रंगारंग प्रस्तुतियां देकर बच्चों ने मनाया जन्माष्टमी पर्व

कुरावर/नरसिंहगढ़. आज जहाँ आधुनिक होने की अंधी दौड़ में अधिकांश लोग अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे है। वहीं सरस्वती विद्या मंदिर हमारी सभ्यता व संस्कृति के ध्वज को अग्रिम पंक्ति में फहराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। जहाँ एक ओर शुक्रवार के दिन श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर कई विद्यालयों ने महज अवकाश घोषित कर औपचारिकता पूरी की गई। वहीं दूसरी ओर सरस्वती विद्या मंदिर में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें विद्यालय के बच्चों द्वारा भजन, नृत्य, अभिनय के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं को प्रदर्शित करने वाले कई रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री मोकम सिंह सत्कावत व रामसिंह मीणा की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने का काम किया। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय आचार्य पंकज सेन द्वारा कविता के माध्यम से ऊधो, मीरा व श्रीकृष्ण चरित्र पर प्रकाश डाला गया। अंत में कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विद्यालय प्राचार्य ब्रजमोहन सिंह ने श्रीकृष्ण के जीवन के कई प्रसंगों के माध्यम से बच्चों को प्रेरित किया। कार्यक्रम में पधारे अतिथियों, अभिभावकों, पूर्व छात्रों का आभार प्रकट करते हुए बच्चों की मनोहर प्रस्तुतियों की सराहना की।

डाक पं.-म.प्र./भोपाल/4-381/2018-20 Reg.RNI/MPHIN/2014/58399

नेस्टेड प्रज्ञा सॉफ्टवेयर प्रशिक्षण - शिवपुरी

नेस्टेड प्रज्ञा सॉफ्टवेयर प्रशिक्षण, शिवपुरी में सहभागी प्रशिक्षार्थीगण

हरदा शिशु वाटिका का अवलोकन करते हुए संगठन मंत्री श्री हितानंद शर्मा

गणेश उत्सव - सरस्वती शिशु मंदिर वाचनालय भवन चंदेरी

खेल दिवस बनखेड़ी में सहभागिता करते हुए भैया-बहिन

संस्कृत सम्भाषण शिविर, गंजबासौदा

आचार्य अभ्यास वर्ग माह- अगस्त में सहभागी आचार्य-दीदी

संस्कृति ज्ञान परिक्षा के प्रमाण-पत्र वितरित करते हुए हर्षवर्धन नगर भोपाल की दीदीयाँ

डाक पं.-म.प्र./भोपाल/4-381/2018-20 Reg.RNI/MPHIN/2014/58399

जन्माष्टमी उत्सव कालापाठा, बैतूल

संस्कार केन्द्र गतिविधि करते भैया-बहिन - नदीद्वार ग्वालियर

जन्माष्टमी उत्सव सुल्तानपुर

सामूहिक बांसुरी वादन करते हुए भैया- सरस्वती विद्यापीठ, शिवपुरी

विभाग बैठक ग्वालियर- स्थान भरतगढ़ दतिया में श्री शिरोमणी दुबे

विभाग बैठक ग्वालियर- स्थान भरतगढ़ दतिया में सहभागी - प्रधानाचार्यगण

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक मोहनलाल गुप्ता द्वारा 1806, प्रज्ञादीप हर्षवर्धन नगर, भोपाल से प्रकाशित,
संपादक : राजेन्द्र सिंह परमार एवं श्री श्रद्धा ऑफसेट, देशबन्धु कॉम्पलेक्स, जोन-1 एम.पी.नगर, भोपाल-462023 (म.प्र.) से मुद्रित।